चैतन्य लहरी

खण्ड: X 1998 अंक:7,8

मां के प्रेम ने रुसी हृदय जीता

मास्को के समीप आइवरू में लिया गया ईसा मसीह की मां मैरी का एक चमत्कारिक चित्र

"आत्मा के प्रकाश से उज्जवल आपका सुन्दर अस्तित्व संसार के सम्मुख प्रमाणित कर देगा कि सहजयोग सत्य है"

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी)
नवरात्रि पूजा, कवैला - 5-10-1997

इस अंक में

		पृष्ठ नं.
	<u>कोव</u>	
1.	जन कार्यक्रम	3
2.	आकाश में चमत्कार	5
	<u>तालियाती</u>	
3.	शक्ति पूजा	6
4.	जन कार्यक्रम	8
	<u>सेंट पीटर्सबर्ग</u>	
5.	जन कार्यक्रम	10
	<u>मास्को</u>	
6.	जन कार्यक्रम	16
7.	रूस-संकीर्णद्वार	18
8.	चिकित्सा सम्मेलन	19
9.	दिवाली पूजा	23
10.	श्रीमाताजी को पीटर अकादमी की सदस्यता	26
11.	सहजयोग में विवाह	26

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय वालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

जन कार्यक्रम

कीव

28-07-1993

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम । आरम्भ में हमें यह समझना है कि सत्य जो है वही है, हम इसके विषय में सोच नहीं सकते, इसे परिवर्तित नहीं कर सकते और मानव चेतना पर इसे जान भी नहीं सकते । हमें समझना होगा कि सत्य क्या है। सत्य यह है कि वास्तव में हम यह शरीर, मस्तिष्क, अहंकार एवं बन्धन नहीं है। हम पवित्र आत्मा हैं। हम कहते हैं-मेरा शरीर, मेरे संस्कार, मेरा अहम्; परन्तु यह 'मेरा' क्या है? आप सब ये सुन्दर फूल देखते हैं। परन्तु हम ये नहीं समझते, सोचते तक भी नहीं कि यह महान चमत्कार है। नन्हें से बीज में से इन फूलों का निकल आना एक चमत्कार है और भिन्न बीजों में से भिन्न प्रकार के सुन्दर फूलों का निकलना ! किसने यह सब आयोजन किया? हमारे हृदय को कौन धड़काता है? चिकित्सक लोग कहेंगे कि यह कार्य स्वचालित नाड़ी तन्त्र करता है। यह 'स्व' कौन है? यह सब प्रश्न आपके मस्तिष्क में आते हैं और भिन्न मार्गों को अपनाकर हम उत्तर खोजने का प्रयत्न करते हैं। विज्ञान के लिए सीमाएं हैं। हमें समझ लेना चाहिए कि विज्ञान भी बहुत से प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। उन प्रश्नों में से एक प्रश्न यह है कि हम पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए हैं? इसका लक्ष्य क्या है? विज्ञान यदि इस प्रश्न का उत्तर दे सकता तो यह 'पूर्ण' सत्य के विषय में भी बता सकता। परन्तु विज्ञान यह उत्तर नहीं दे सकता।

तो अब हमें अपने अन्दर देखना है, अन्दर झांककर देखना है कि हम मानव के रूप में यहां क्यों आए? उत्तर मिलता है कि विकास प्रक्रिया का अन्त है। ईसा ने कहा था कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा। सभी धर्मों ने यही बात कही है। परन्तु इसे घटित होना होगा। यह मेरा एक भाषण मात्र नहीं है, एक घटना है जिसे घटित होना होगा।

आज आप सब लोग अपने अन्तर्निहित सूक्ष्म चक्रों तथा सूक्ष्म प्रणाली के विषय में जानने के लिए यहां आए हैं। इसके लिए आपको अपना मस्तिष्क वैज्ञानिकों की तरह से खुला रखना होगा और यदि यह प्रमाणित हो जाए तो इसे स्वीकार भी करना होगा । आप यदि ईमानदार हैं तो इसे स्वीकार कर लेंगे क्योंकि यह आपके अपने हित के लिए है। इसमें आपके देश का हित है और पूरे संसार का हित है। **अन्त:स्थित सूक्ष्म चक्रों की खराबी के कारण ही अधिकतर समस्याएं खड़ी होती हैं और यदि किसी तरह से हम इन चक्रों को सुधार लें तो समस्याओं का समाधान हो जाता है।** जागृत होकर रीढ़ के सिरे पर स्थित त्रिकोणाकार अस्थि में आराम करती हुई कुण्डलिनी शक्ति छ: चक्रों में से होती हुई जब सहस्रार चक्र को भेदती है तो यह आपका सम्बन्ध सारा जीवन्त कार्य करने वाली परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से कराती है।

इस प्रकार आपके शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। निश्चित रूप से सहज योग ने बहुत से असाध्य रोग ठीक किए हैं और बहुत से चिकित्सक सहजयोग का अनुसरण कर रहे हैं। हर बात का वैज्ञानिक उत्तर है। रूस में दो सौ चिकित्सक सहजयोग द्वारा कार्य कर रहे हैं।

मानव शरीर में अन्य समस्याएं भी हैं जो कि मानसिक हैं। ये हमारे अत्याधिक सोचने एवं चिन्ता करने के कारण आती हैं और हम तनावग्रस्त हो जाते हैं। बहुत से लोग न करने योग्य कार्यों को कर रहे हैं और परिणाम स्वरूप बहुत सी मानसिक समस्याओं के शिकार हो जाते हैं। लोग या तो पागल हो जाते हैं और या मनोभाजन (SCHIZOPHRENIA) रोगी । कुण्डलिनी की जागृति से सभी प्रकार की मानसिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

तीसरी समस्या आध्यात्मिक है क्योंकि, हम जानते हों या ना जानते हों, हम अपनी आत्मा को खोज रहे हैं। इसी कारण आजकल बहुत से कुगुरु आ गए हैं जो लोगों को सम्मोहित कर रहे हैं। आज प्रात: एक युवक मेरे कमरे में आया और पागलों की तरह से बोलने लगा। मैं हैरान थी कि किस प्रकार यह व्यक्ति सम्मोहित है! परन्तु आपसे धन बटोरने के लिए लोग आपको सम्मोहनबद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। इन सुन्दर फूलों के लिए आपने पृथ्वी मां को कितना धन दिया? इस शरीर को चलाने के लिए कितना धन चाहिए? किसे हम यह पैसा देंगे। ये सब स्वत: होता है। सहज का अर्थ है आपके साथ जन्मी। खिलना फूलों का स्वभाव है, अंकुरण करना पृथ्वी का स्वभाव है। इसी शक्ति की रचना आपके अन्दर भी है। यह आपकी शक्ति है। अपनी शारीरिक, मानसिक, एवम् आध्यात्मिक समस्याओं को हल करके आत्मा बन जाना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। केवल इतना ही नहीं घटित होता । मनुष्य होने के कारण हम सदैव विनाशकारी दुर्व्यस्नों में फंस जाते हैं। ये सब बुरी आदतें छूट जाती हैं क्योंकि हमारे अन्दर विवेक जागृत हो जाता है। यह विवेक हमें ठीक करता है, उसी प्रकार जैसे अन्धेरे में यदि आप अपने हाथ में सांप पकड़े हों तो किसी और के कहने पर आप इसे छोड़ेंगे नहीं, हो सकता है कि सांप के काटने पर भी आप उसे न छोड़ें, परन्तु किसी प्रकार यदि वहां प्रकाश हो जाए और

आप देख सके कि आपके हाथ में सांप है तो एकदम आप उसे फैंक देंगे। ऐसा करने के लिए किसी को बताना नहीं पड़ेगा । आत्मप्रकाश से आप अपने गुरु, अपने पथ-प्रदर्शक बन जाते हैं। यही आत्मसाक्षात्कार है, जिसे हम संस्कृत में बोध कहते हैं अर्थात् आपको यह वास्तविकता महसूस करनी है, इस सर्वव्यापी शक्ति को अपने मध्य नाड़ी-तन्त्र पर अनुभव करना है और इसके विषय में सभी कुछ जानना है। यह रहस्य नहीं है। सहजयोग में कोई रहस्य नहीं है। हर व्यक्ति सभी कुछ जानता है। सब जानते हैं कि किस प्रकार कुण्डलिनी उठानी है। चक्रों की बाधाओं अन्य बाधाओं के विषय में सभी को ज्ञान है। यही कारण है कि एक व्यक्ति हजारों लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान कर सकता है। यह प्रकाशरंजित होने का समय है, अन्तिम निर्णय का समय है। कुरान में इसे 'कयामा' कहा गया है और बताया है कि आपके हाथ बोलेंगे और आपके तथा अन्य लोगों के विषय में सभी कुछ बताएंगे। वास्तव में यही घटित हो रहा है; अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप अपने तथा अन्य लोगों के चक्रों को महसूस कर सकते हैं।

इस प्रकार आपमें आत्मज्ञान विकसित हो जाता है तथा आप सामूहिक चेतन भी हो जाते हैं अर्थात् संकुचित विश्व ब्रह्माण्ड का रूप धारण कर लेता है, बूंद सागर बन जाती है। तब आपको पता भी नहीं होता कि पूरे विश्व में आपके कितने भाई-बहन हैं। 55 राष्ट्रों में सहजयोग कार्यान्वित है तथा पूरे विश्व में आपके भाई-बहन हैं। यह उसी प्रकार है जैसे आपको अंगुली में कुछ चुभ जाए तो पूरे शरीर में सिहरन (प्रतिक्रिया) होती है। यदि यूक्रेन के किसी व्यक्ति को कुछ हो जाए तो अमेरिका, जर्मनी या भारत से लोग दौड़कर आ जाएंगे क्योंकि आप पूर्ण सत्य जानते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी बता सकते हैं कि आपमें क्या दोष है; वे आत्मसाक्षात्कार भी दे सकते हैं। मैं सोचती हूं, वे इस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त हैं। परन्तु हमें जानना होगा कि हमारी अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती। यह शाश्वत है। अपनी गलतियों से हो सकता है कि हमने इसे बादलों से ढक दिया हो । एक बार जब आप अपना योग इस दिव्य शक्ति से स्थापित कर लेते हैं तो आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि आप अबोध व्यक्ति बन गए। अपनी आन्तरिक संवेदनशीलता को आप आन्तरिक शक्ति के रूप में विकसित कर लेते हैं और अत्यन्त शान्त हो जाते हैं। आपका यही शान्त स्वभाव ऐसे भविष्य को जन्म देगा जो सभी प्रकार के युद्धों से मुक्त होगा। परिवार सुधर जाते हैं, बच्चे सुधर जाते हैं और चहूँ ओर हमें फरिश्तों सम लोग दिखाई पड़ते हैं। आपका चित्त अति अबोध एवं प्रभावशाली हो जाता है। जहां भी आपका चित्त जाता है, कार्य हो जाता है। आप नहीं जानते कि आपकी शक्तियां महान हैं और आपके अन्तर्निहित ज्ञान, जो कि शुद्ध ज्ञान है अभिव्यक्त होने लगता है। ये सारा कुछ अजीब लगता है। परन्तु आप भी तो अनोखे हैं। यह उसी प्रकार है जैसे भारत के किसी दूर-दराज गांव में आप टी.वी. ले जाएं और कहें कि इसमें आप सिनेमा देख सकते हैं, तो वे कहेंगे, इस डिब्बे में? "इस डिब्बे में हम कैसे चलचित्र देख सकते हैं?" इसी प्रकार हम भी सोचते हैं कि हम केवल बक्से ही हैं। परन्तु वास्तव में हम ऐसे नहीं हैं। आप हैरान होंगे कि हम किस प्रकार प्रगल्भ हो जाएंगे, किस प्रकार करुणामय बन जाएंगे! तो ये सब आपके लिए है और आज रात आप अपना उत्थान प्राप्त कर सकते हैं। निःसन्देह आप इसके लिए कोई पैसा नहीं दे सकते और न ही इसके लिए कुछ कर सकते हैं। यह सब विद्यमान है। आत्मसाक्षात्कार पाने के पश्चात् आपको सामूहिकता में कुछ समय देना होगा ताकि इसके विषय में सब कुछ जान सकें। इसे कोई भी कर सकता है। चाहे आप शिक्षित हों या अशिक्षित, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु यह मूर्ख, अहंकारी या सम्मोहन में फंसे लोगों के लिए नहीं है। मूर्खतापूर्ण संस्थाओं में लिप्त लोगों के लिए भी यह नहीं है। इस कार्य पर केवल दस मिनट लगेंगे परन्तु इसे मैं आप पर लाद नहीं सकती। इसको पाने के लिए आपमें शुद्ध इच्छा होनी आवश्यक है। मैं आपकी स्वतन्त्रता का सम्मान करती हूँ, अतः जो लोग आत्मसाक्षात्कार नहीं लेना चाहते उन्हें यहां से चले जाना चाहिए।

यह इतना बड़ा ज्ञान है कि एक प्रवचन में मैं आपको सभी कुछ नहीं बता सकती। परन्तु ये बत्तियां जलाने के लिए आपको केवल एक बटन दबाना पड़ता है और सभी बत्तियां जल उठती हैं। यदि मुझे बिजली का पूरा इतिहास बताना पड़े कि किस प्रकार बिजली कीव में लाई गई तो यह अत्यन्त ऊबाऊ हो जाएगा। बत्तियों को जला लेना ही अच्छा है। यह अन्तर्रचित है। आपको केवल तीन सहज सी शर्तें पूरी करनी होंगी। पहली यह कि आपको मानना होगा कि आप दोषी नहीं हैं। आखिरकार आप इन्सान हैं और इन्सान ही गलतियां करते हैं। आप परमात्मा नहीं हैं। गलतियां यदि आपने की हैं तो इनका सामना करें, इन्हें दोष भाव न बनाएं। ऐसा न करने से आपका विशुद्धि चक्र खराब होता है। यह चक्र बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी खराबी से हृदयशूल (ANGINA) हो सकता है। इससे व्यक्ति को स्पोंडिलाइटिस (SPONDYLITIS) और सुस्त-अंग रोग भी हो सकते हैं। तो दोष भाव ग्रस्त होना असत्य है। आप मानव हैं, विकास के स्तम्भ हैं। अतः किसी भी प्रकार से अपनी भर्तस्ना न करें, स्वयं को क्षमा करें। यह चक्र यदि ठीक न होगा तो कुण्डलिनी नहीं चढ़ पाएगी।

दूसरी शर्त अत्यन्त साधारण है, आपको सभी को क्षमा करना होता है। तार्किक दृष्टि से, आप किसी को क्षमा करें या न करें कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु यदि आप क्षमा नहीं करते तो आप गलत हाथों में खेलते रहते हैं। आप उन लोगों के हाथों में खेलते हैं जो आपको कष्ट देना चाहते हैं जबकि वे स्वयं मजे लेते हैं। व्यर्थ में आप स्वयं को कष्ट देते हैं। क्षमा करके आपको बहुत हल्का महसूस होता है। अतः कृपा करके सभी को क्षमा कर दें। उनके विषय में सोचें ही नहीं। केवल क्षमा कर दें। मैं लोगों से कहती हूँ कि पेड़ों से बताएं, फूलों से बताएं कि आप सबको क्षमा कर रहे हैं।

अब तीसरी शर्त यह है कि आपको स्वयं में पूर्ण

विश्वास करना होगा। अपनी भर्तस्ना न करें। कृपया स्वयं के प्रति अत्यन्त प्रेममय दृष्टिकोण रखें। उन लोगों पर विश्वास न करें जो कहते हैं कि आप अपराधी हैं। हम प्रमाणित करेंगे कि आप अपराधी नहीं हैं। अतः स्वयं पर पूर्ण विश्वास रखें और वही विश्वास आपको आपका आत्मसाक्षात्कार दिलवाएगा। पहले आप हर चीज के प्रति चेतन होंगे परन्तु आपमें विचार न होंगे । यही वह अवस्था है जब आप वर्तमान में होंगे। प्रायः हम वर्तमान में नहीं रह पाते, या तो हम भूतकाल में होते हैं या भविष्यकाल में। तब आप शान्ति की स्थिति में होंगे, वर्तमान ही वास्तविकता है। भूतकाल समाप्त हो गया है, भविष्यकाल का कोई अस्तित्व नहीं। अतः आपको वर्तमान में होना होगा। अतः पहली उपलब्धि जो आपको प्राप्त होती है वह है निर्विचार चेतना, आपकी चेतना में एक नया आयाम। दूसरे, मैंने आपको बताया है, आप सामूहिक चेतन हो जाते हैं। अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप सर्वव्यापी सूक्ष्म शक्ति को महसूस कर सकते हैं। आदिशक्ति की शीतललहरियों को अपने सिर पर आप महसूस कर सकते हैं या कुण्डलिनी के बाहर आते ही आप महसूस कर सकते हैं। ये सारी बातें सत्यापित की जा सकती हैं। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् सहजयोग में यह सब अनुभवगम्य हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

आकाश में चमत्कार

कोव में जन कार्यक्रम से पूर्व कुछ सहजयोगियों को आकाश में चमत्कार देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार किया:-

श्रीमाता जी के आगमन की अन्तिम तैयारियां हो गई थीं। संगीतज्ञों ने कुछ भजन गाए, तभी आवाज सुनाई दी : "देखो आकाश में कितनी सुन्दर कुण्डलिनी दिखाई पड़ रही है!" जो दृश्य हमने देखा उसका पुनः दिखाई देना असम्भव है। ऊपर सर्वप्रथम बर्फ की तरह से सफेद कुण्डल दिखाई दिया, यह कुण्डलिनी है, और तत्पश्चात् श्रीगणेशजी की प्रतिमा दिखाई दी (यह बिल्कुल वैसी थी जैसी हमने स्लाइडों में देखी थी)। श्रीगणेशजी की प्रतिमा के थोड़ा-सा नीचे श्रीहनुमानजी दिखाई दिए। श्री हनुमान लुप्त हो जाते और अविलम्ब कहीं अन्यत्र दिखाई पड़ते। दायीं ओर स्पष्ट सफेद क्रूस देखा गया, जिसका स्थान शीघ्र ही श्रीगणेशजी ने ले लिया जिनकी सूंड के सिरे पर छोटा-सा क्रूस बना हुआ था। मध्य में स्वास्तिक बना हुआ था, जिसकी एक छोटी रेखा लुप्त थी । स्वास्तिक से आगे तीसरी बार श्रीगणेशजी दिखाई दिए परन्तु इस बार वे पार्श्व दृष्य में न थे।

हवा तेज न चल रही थी फिर भी आकाश में भिन्नक्रम परिवर्तन हो रहे थे, मानो धीमी गति से चलने वाली जीवन्त कार्टून फिल्म हो। तब बहुत-सी ऐसी तस्वीरें एक-दूसरे का स्थान लेने लगीं जिनकी हमें पहचान न थी।

अन्त में हमने स्पष्ट एक वृत्त देखा जिसका आकार बड़े चन्द्र जितना था। इस वृत के अन्दर पुरुष का एक सुन्दर चेहरा दिखाई दिया। कोई कह उठा, "ये ईसा मसीह हैं।" ये तस्वीर तुरन्त विलय हो गई। निराश होकर मैंने अपनी दृष्टि हटा ली। अचानक मुझे सुनाई दिया, "ये गरुड़ हैं!" पक्षी के लहराते हुए पंख सफेद रंग के थे। यह तस्वीर काफी समय तक दिखाई देती रही। पहले तो यह पक्षी पार्श्व में देखा गया तत्पश्चात् यह दर्शकों की ओर आया तथा अपने गरिमामय पंख स्वागतमुद्रा में लोगों की तरफ फैला दिए।

इसके पश्चात् जल वाहिकाएं मेरुरज्जू मार्ग और तीर दिखाई दिए, जिन्होंने शनैः शनैः एक होकर सहस्रार के ऊपर एक प्रकाश वृत्त की रचना की, तब यह सहस्रार एक श्वेत कमल में परिवर्तित हो गया, एक उज्जवल श्वेत कमल के रूप में जिसमें सूर्य की किरणें झांक रहीं थीं। मैंने ध्यान के लिए अपना सिर झुकाया परन्तु तभी मुझे सुनाई दिया : "देखो श्री लक्ष्मी जी हैं।" सफेद कमल का स्थान एक महिला आकृति ने ले लिया था जिसके कई हाथ थे और जो सिर पर ताज पहने हुई थी। यह तस्वीर भी शीघ्र ही लुप्त हो गई। अचानक हमें अपने हाथों पर तेज चैतन्य लहरियां अनुभव हुई। एक जयघोष सुनाई दिया और सभी लोग खड़े हो गए। हमारी परमेश्वरी मां सभागार में आ रहीं थीं। आकाश में चमत्कारिक परिवर्तन जो हमने देखे थे, वे सब भूल गए। आकाश में एक भी बादल न था। केवल नीला रंग था। सभी का चित्त श्रीमाताजी पर था !

शक्ति पूजा

तलियाती

03-08-0993

आज एक बार फिर आप लोगों के साथ होने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह अत्यन्त आनन्दमयी एवम् सौरभ पूर्ण है। आज हमने 'शक्ति', देवी की पूजा करने का निर्णय लिया है। आप जानते हैं कि हमारे अन्दर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और कुन्डालिनी की अनेक शक्तियाँ हैं। यह सब शक्तियाँ हमारे उत्थान के लिए हैं। इन शक्तियों को यदि उचित ढंग से समझा जाए, उपयोग किया जाए, तब आपका उत्थान स्थायी हो सकता है। एक बार उत्थान को प्राप्त करके जब आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर जाते हैं तो यह शक्तियाँ ज्योतिर्मय हो जाती हैं और यह ज्योतित शक्तियाँ पूर्णत: प्रेम से भर जाती हैं। प्रेम के प्रकाश से हम परिपूर्ण हो जाते हैं। अत: आत्मसाक्षताकर के पश्चात हम केवल एक ही शक्ति का उपयोग करते हैं और वो है-प्रेम की शक्ति।

श्री राम के दो बेटे थे: लव और कुश। उनमें से लव रूस आया। यही कारण है कि आप लोग 'स्लाव' कहलाते हैं अर्थात प्रेम सहित। अत: रूस के लोगों के हृदय पहले से ही प्रेम से परिपूर्ण हैं। अब यह आत्मसाक्षत्कार से पूर्व का प्रेम नहीं रहा। एक नए रूप में, नए आयाम में यह परिवर्तित हो गया है। आत्मसाक्षत्कार से पहले आपका मोह स्वयं से था: अपने शरीर से अपने मष्तिष्क से, अपने संस्कारों से, अपने बुद्धि से और अपने अहम् से । और इस प्रकार आप अपने अन्दर बहुत से भयानक अन्धेरे विकसित कर लेते थे। अपने शरीर से यदि आपको मोह होगा तो या तो आप बहुत अधिक खाएंगे या बिलकुल नहीं खाएंगे, या बहुत अधिक व्यायाम करेंगे या शरीर का सुन्दर आकार बनाने के लिए विशेष रूप से कार्य करेंगे। परन्तु जब आप आत्मसाक्षत्कार प्राप्त कर लेते हैं और समझ जाते हैं कि शरीर परमात्मा का मन्दिर है तब आप अपने शरीर को स्वच्छ रखते हैं और उन सभी वस्तुओं को दूर रखने का प्रयत्न करते हैं जो शरीर के लिए हानिकारक हैं।

एक अन्य लिप्सा, मोह, जो हममें है वह अति सीमितहै, जैसे आप का परिवार, आप के बच्चे, आप की पत्नी, आपका पति आदि-आदि। इस सब के बावजूद मनुष्य अत्यन्त स्वार्थी हो सकता है जिसे सबसे पहले अपनी चिन्ता होती है तत्पश्चात किसी और की । वह अपने बच्चों, अपने पति या पत्नी के अहम् को बढ़ावा देने के लिए उन्हें एक प्रकार से बिगाड़ भी सकता है क्योंकि वे बहुत ही आत्मकेन्द्रित होते हैं और उनकी दृष्टि अत्यन्त संकीर्ण होती है। कभी-कभी उन्हें पता लगता है कि जिन लोगों के लिए, वे यह सारे गलत कार्य कर रहे हैं, वे वास्तव में उनकी बिल्कुल चिन्ता नहीं करते।

आत्मसाक्षत्कार होने के पश्चात वे देखने लगते हैं कि जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ यह न तो मेरे लिए, न मेरे परिवार के लिए और न ही मेरे सम्बंधियों के लिए हितकर है।

आत्मसाक्षत्कार के पश्चाज आप सामूहिक रूप से सोचते हैं। आप जब अपनी पत्नी अपने बच्चों तथा अपने परिवार के विषय तक सोचते हैं तो भी आप वही सोचते हैं जो उनके लिए हितकर है। तुरन्त आपका चित्त उनकी समस्याओं एवम् विनाशकारी प्रवृत्तियों पर जाता है। तब प्रेम की यह शक्ति सारे वातावरण को परिवर्तित कर देती है। परिवार के लोग यह देखते हैं कि आप कितने समर्पित एवम् श्रेष्ठ हैं। जीवन की इस श्रेष्ठ सूझ-बूझ से वे अत्यन्त धैर्यवान, परिवार के प्रति मधुर बनने का प्रयास करते हैं और उन्हें उचित मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते हैं।

ज्योतिर्मय हो जाने के कारण लिप्सा समाप्त हो जाती है और निर्लिप्त प्रेम की शक्ति महानतम है। यह पेड़ के रस सम है जो पृथ्वी माँ से उठता है, पेड़ के छोटे-छोटे हिस्से में जाता है और तब या तो वाष्मीकृत हो जाता है और या पृथ्वी माँ में लौट जाता है। किसी एक फूल या पत्ते में यह इस कारण नहीं रुकता क्योंकि यह उसे पसन्द है। बिना लिप्त हुए आवश्यकतानुसार यह पेड़ के हर भाग का पोषण करता है। किसी एक फूल या पत्ते से यदि यह लिप्त हो जाए तो वह पत्ता या फूल मर जाएगा और पेड़ भी समाप्त हो जाएगा। पेड़ को यह पूर्ण वैभव एवम् अच्छाई प्रदान करता है। एक सहजयोगी सन्त भी अपने परिवार, अपने मित्रों तथा अन्य सब के प्रति इसी प्रकार आचरण करता है।

अभी तक हमने केवल घृणा की ही शक्ति का उपयोग

किया है। राजनीति में विशेष रूप से। एक देश सोचता है कि उन्हें दूसरे देश से घृणा करनी चाहिए, वे इसी के लिए उत्पन्न हुए हैं। सौ वर्ष पूर्व क्योंकि कोई झगड़ा हुआ था, या कोई युद्ध हुआ था, तो आने वाली पीढ़ियाँ अब भी परस्पर लड़े जा रही हैं। आप आश्चर्यचकित होंगे कि पहली बार जब मैं रूस आई तो जर्मनी के पच्चीस सहजयोगी यहाँ मेरी सहायता करने के लिए दौड़े चले आए। अपने हृदय में दुर्भावना को स्थान न देकर, कि उनके पूर्वजों ने बहुत से रूसी लोगों का वध किया था, रूसी लोगों की सेवा करना उन्होंने अपना महान कर्त्तव्य समझा। तो घृणा का स्थान शक्तिशाली प्रेम ले लेता है। प्रेम की यह शक्ति महानतम है और सहजयोग में आने के पश्चात हमें केवल प्रेम की शक्ति का ही उपयोग करना है। हमारे पास यह अत्यन्त शक्तिशाली एवम् प्रभावकारी शस्त्र है क्योंकि यह दिव्य प्रेम है। परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति हमारे इस दिव्य प्रेम का स्रोत है। कहते हैं कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है तो उनसे अधिक शक्तिशाली कौन हो सकता है? अपने प्रेम में परमात्मा हमारी रक्षा करता है और हमारी सारी आवश्यकताएं पूर्ण करता है। वह (परमात्मा) हमें आशीर्वादित करता है और हमें आनन्द देने का सामर्थ्य देता है। उनकी सरकार अत्यन्त कुशल है और अत्यंन्त वेग से कार्य करती है।

आज मैं आ रही थी तो एक सहजयोगी आया और कहने लगा," श्रीमाताजी आज घने बादल बने हुए है। वर्षा हो सकती है!" पाँच मिनट के बाद जब मैं बाहर आई तो देखा कि आकाश साफ हो चुका था। **तो ये पंचतत्व भी परमात्मा के बच्चों के नियंत्रण में होते हैं। कठोर से कठोर व्यक्ति भी पिघल कर इस शक्ति के सन्मुख बिनम्र होकर आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। यदि कोई हानि पहुँचाने का प्रयत्न करे तो वो भी नम्र हो जाता है।** इतने चमत्कार हुए हैं कि इस छोटे से भाषण में मैं इनके विषय में नहीं बता सकती। परन्तु आप अपने ही जीवन में देखेंगे कि आपके हृदय में निहित यह प्रेम की शक्ति किस प्रकार आपकी रक्षा करती है। मैंने ऐसे लोग देखे है। जो अत्यन्त क्रोधी एवम् क्रूर हैं तथा अन्य लोगों का जीना मुश्किल किए रहते हैं। वे भी अत्यन्त सुन्दर एवम् अच्छे बन जाते हैं। प्रेम के इस प्रकाश में आप स्वंय का ठीक प्रकार से देखेंगे और गलत तथा दुष्चरित्र चीजों को त्याग देंगे। यह प्रेम शाश्वत है, अति शक्तिशाली है और मानव की सामूहिकता के प्रति आपको विश्वस्त करता है। आत्मा ही आपकी शक्ति को प्रकाशित करती है और विश्व के सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम तथा सामूहिकता का स्रोत है। आपका चित्त कष्टों तथा दुखों में फँसे उन लोगों की तरफ जाता है जिन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता है। तो इस ज्योतित चित्त से कहीं भी बैठे हुए आप उनकी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं ऐसे लोगों को न तो युद्ध करने की आवश्यकता है, न शस्त्रों की और न सीमाएं बनाने कीं। रूस के लोग जब भारत जाते हैं तो भारत उन्हें अपना देश प्रतीत होता है और भारत के लोग जब रूस जाते हैं तो वे रूस को अपना देश मानते हैं। तो युद्ध कौन करेगा? कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे आप कह सकें कि यह मेरा शत्रु है। ये समय विशेष है, मैं इसे बसन्त का समय कहती हूँ जब बहुत से फूल (मनुष्य) सत्य को खोज रहे हैं। उनका प्रेम ही उनकी सुगन्ध है। अब उन सब को फल बनना होगा। यह समय क्योंकि अत्यन्त महत्वपूर्ण है इसलिए अब यह घटित होगा। सभी धर्मों में इसका वर्णन है। हम किसी से घृणा नहीं करते क्योंकि किसी न किसी धर्म में तो हमारा विश्वास है। इसके विपरीत हम सभी धर्मों को मानते है। इसी शक्ति के प्रताप से बूँद सागर बनती है और व्यक्ति सामूहिक हो जाता है।

तो सर्वव्यापी शक्ति आप के अन्तर्निहित सभी शक्तियाँ प्रकाशमान करती है। यह व्यक्ति में परिवर्तन करती है और इसके तरीके अत्यन्त सुन्दर एवम् कोमल होते हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस शक्ति में विश्वास हो और दूसरों के प्रति प्रेम। यह प्रकाशित प्रेम आपकी सभी इक्ष्छाओं को पूर्ण करेगा। यह ऐसी शक्ति है, सर्वव्यापी शक्ति! इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। खुले हृदय से हमें इसे स्वीकार करना है, यह हृदय को परिपूर्ण कर देती है और हमें महान बना देती है। कोई प्रतिस्पर्द्धा है, कोई महत्वाकांक्षा नहीं हैं, कोई ईर्ष्या नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है। तब केवल एक मात्र इच्छा,शेष रह जाती है कि मैं भी आनन्द ले रहा हूँ, अन्य लोग आनन्द लें। सहजयोग को फैलाने के लिए लोग भरसक प्रयत्न करते है, कठोर परिश्रम करते है। कम पैसे होते हुए भी यात्राए करते हैं और लोगों को विश्वस्त करने का प्रयत्न करते है। और यह सारा कार्य वे धन लाभ के लिए नहीं करते। जब आप किसी दूसरे व्यक्ति की कुंडलिनी को उठाकर उसे आत्मसाक्षतकार देते हैं तब आपकों महानतम आनन्द प्राप्त होता है। आपके चेहरों का वह तेज मैंने बहुत बार देखा है। इस प्रेम को अधिक से अधिक बढ़ने दें।

इन्होंने मुझसे पूछा कि, माँ सभी स्थानों को छोड़कर आप तलियाती क्यों आए? बोल्गा कि लिए नहीं और न ही आपके इन सुन्दर घरों के लिए, परन्तु यहां रहने वाले मेरे बच्चों के लिए मैं यहा आई हूँ।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जन कार्यक्रम तलियाती

04-08-0993

सभी सत्य साधकों को मेरा नमस्कार। हमें समझना है कि सत्य जो है वही है-हम इसे परिवर्तित नहीं कर सकते और इसके विषय में सोच भी नहीं सकते। दुर्भाग्य है कि हम इसे जान भी नहीं सकते। कुछ घटित होना होता है जिसके लिए हमें अन्तर्मुखी होना पड़ता है। यह घटना सहज है। सहज का अर्थ है स्वत: तथा आपके साथ जन्मी हुई। यह अपके साथ जन्मी हुई है। यह अधिकार है, हर मनुष्य को इसका अधिकार है।

तो कुछ ऐसा घटित होना चाहिए जिसके माध्यम से हम अपना चित्त अन्दर ले जा सकें। आप सभी को आत्मा बनने का अधिकार है ताकि हम परमात्मा के साम्राज्य के नागरिक बन सकें। बिना आत्मा बने हमारा चित्त बाहर की ओर रहता है। हम कहते हैं मेरा शरीर, मेरा हाथ, मेरा नाक, मेरी भावनाएं, मेरी बुद्धि, मेरा अहम्, मेरे संस्कार, आदि आदि। परन्तु यह 'मेरा' है कौन, इसका सम्बन्ध किससे है? यह आत्मा है। यही इन सब चीजों की स्वामी है। यह सभी कुछ देखती है। जो भी कार्य हम कर रहे हैं आत्मा उसकी दर्शक मात्र है।

जब तक हमें विवेक प्राप्त नहीं हो जाता, हम ऐसे कार्य करने लगते है। जो हमारे जीवन के लिए विनाशकारी है। इस प्रकार हम स्वयं को हानि पहुँचाते हैं। रोगग्रसत होकर, मानसिक रूप से असुतुलित होकर या पागल होकर हम शारीरिक कष्ट भोगते हैं, गलत स्थानों पर जाकर हम आध्यात्मिक रूप से कष्ट उठाते हैं। क्योंकि हम अंधेरे में हैं अत: हमें आत्मा बनना होगा। अज्ञानवश हम नहीं जानते कि उचित क्या है और अनुचित क्या है। उस दिन किसी ने मुझे बताया कि कोई कुगुरु कह रहा है कि विश्व का अन्त होने वाला है। बिना पूछे कि आप कैसे जानते हैं : लोग ऐसी बातों में कूद पड़ते हैं। वे इन्हें स्वीकार कर लेते हैं और भय के कारण पागल तक हो जाते हैं। हमें पूछना चाहिए," आप यह बात कैसे कहते हैं? सत्य, पूर्ण सत्य को जानने का क्या तरीका है?" उदाहरणर्थ हम कहते हैं कि ईसामसीह परमात्माके युग थे। वे थे। नि:सन्देह। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है। इसी कारण सभी चर्च दुर्बल हो गए हैं, कोई चर्च नहीं जाता। किस प्रकार प्रमाणित करें कि ईसामसीह परमात्मा के पुत्र थे? बहुत से लोग तो परमात्मा में विश्वास ही नहीं करते क्योंकि यह बात प्रमाणित नहीं हो सकती। हमें यह बात प्रमाणित करनी होगीं हर सच्ची बात को प्रमाणित करने का समय अब आ गया है।

आत्मा यदि पूर्ण सत्य का स्रोत है तो हमें आत्मा की ओर जाना चाहिए, अज्ञानता में यदि हम फंसे रहे तो हम विश्व के कष्टों का अन्त नहीं कर सकेंगे। युद्धों से हम बच न सकेंगे। दरिद्रता एवम् सभी प्रकार के रोगों से हम छुटकारा न पा सकेंगे।

जिस शक्ति के विषय में मै बात कर रही हूँ वह आपके अंत: स्थित है। उदाहरणार्थ, यह यन्त्र (माइक) यदि अपने स्रोत से जुड़ा हुआ न हो तो यह अर्थहीन है। इसी प्रकार हम यदि इस सर्वव्यापी सूक्ष्म शक्ति से जुड़े हुए नहीं हैं तो हमारा भी कोई अर्थ नहीं है। **यह सर्वव्यापी दिव्य शक्ति क्या है? आप देखते हैं कि असंख्य सुन्दर पुष्प हैं। ये सुन्दर पुष्प हमें कौन देता है? हमारे हृदय को कौन चलाता है? यह सारा जीवन कार्य कौन करता है? विज्ञान ये नहीं बता सकती कि हम इस पृथ्वी पर क्यों हैं। तो हमें उत्तर खोजने होंगे।** यह उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें दिव्य प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जुड़ना होगा। इस कार्य के लिए हमारे अन्दर एक शक्ति स्थापित कर दी गयी है जिसे हम कुण्डलिनी कहते हैं। यह सेक्रम (पवित्र अस्थि) नामक त्रिकोणाकार अस्थि में विराजित है। इसका अर्थ यह हुआ कि यूनानी लोगों को इस बात का ज्ञान था कि यह त्रिकोणाकार अस्थि पवित्र है, इसलिए उन्होंने इसे पवित्र अस्थि की संज्ञा दी।

आप सब लोगों में भी यह शक्ति विद्यामान है और इस शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करना आपका पूर्ण अधिकार है। यह दिव्य शक्ति ज्ञान का सागर है। जो भी हम जानते हैं यह एक हिमनदी का सिरा मात्र है। परन्तु आत्मा के प्रकाश के माध्यम से योग प्राप्त हो जाने के पश्चात हम हर पूर्ण-ज्ञान के विषय में जान सकते हैं। तब हमे महसूस होता है कि हमारी अंगुलियां भी ज्योतित हो गई हैं। जो भी कुछ हम जानना चाहते हैं, यह उसके बारे में सूचना देने लगती है। प्रकाशित अंगुलियों के माध्यम से जो सूचना प्राप्त होती है उसके विषय में लोग तर्क वितर्क नहीं करते। सभी को एक ही जैसी सूचना मिलती है। इस कारण वाद-विवाद नहीं हो सकता। व्यक्ति को समझना होता है कि आत्मा प्रकाश का स्रोत है। यह हमारे चित्त को प्रकाशित करती है, इसके द्वारा चित्त पूर्णत: पावन हो जाता है। हमारा पवित्र्य कभी समाप्त नहीं होता। यह हमेशा बना रहता है। इस पर कुछ बादल आ सकते हैं परन्तु वे भी दूर हो जाते हैं तथा हमारे चक्षु तथा मस्तिष्क पवित्र हो जाते

हैं। हमारा चित्त लोभ और वासना से मुक्त हो जाता है कुण्डलिनी शक्ति जब छः चक्रों में से गुजरती है तो इनका पोषण करती है, इनको संघटित करती है। तब आप संघटित महसूस करते हैं। इस पोषण के द्वारा आपकी शारिरीक, मानसिक एवं भावनात्मक समस्याओं का समाधान हो जाता है। छः चक्रों को पार करने के पश्चात कुण्डलिनी सातवें चक्र का भेदन करती है, और तब आपको आत्मसाक्षात्कार (Baptism) का वास्तवीकरण होता है। यह कोई समारोह या भाषण नहीं होता, परन्तु एक घटना घटित होती है, तब आप स्वयं परम चैतन्य की शीतल लहरियों को अनुभव कर सकते हैं। परम चैतन्य (Holyghost) ही आदि शक्ति माँ है। दुर्भाग्य की बात है कि बाइबल में इसका वर्णन नहीं है। उन्होंने तो ईसा मसीह की माँ का भी सम्मान पूर्वक वर्णन नहीं किया । इसका कारण यह हो सकता है कि बाइबल के सम्पादक पॉल को महिलाएं पसन्द न थीं। महिलाओं के प्रति सम्मान न दर्शाने के कारण पश्चिमी देशों में महिलाएं अत्यन्त असुरक्षित हो गई हैं। यही कारण है कि वे सब प्रकार के उल्टे सीधे कार्यों द्वारा स्वयं को घटिया बना रहे हैं। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है। हर समय वे पुरुषों से मुकाबला करने का प्रयत्न करती हैं और घर से बाहर निकलना चाहती हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। महिला पृथ्वी माँ की तरह से सक्षम है। वह शक्ति है। परन्तु यदि आप महिलाओं का सम्मान नहीं करते तो वे सम्माननीय नहीं बनती।

तो वे आदि माँ हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा पिता हैं और उनके पुत्र भी विद्यमान हैं। परन्तु 'माँ' कौन है? माँ भी तो होनी चाहिए? आदि-माँ ही यह माँ है। तो कपोत पक्षी दिखाकर आप यह नहीं कह सकते कि यह आदि माँ है। नि:सन्देह कपोत पवित्र पक्षी है और यह ऊँचाई तक उड़ान भी लेता है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि यह आदि माँ है। आत्मा सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। जब उनका मिलन होता है तो आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति बन जाते हैं, एक ज्योतिर्मय व्यक्ति बन जाते हैं। यह घटित होना अत्यन्त सुगम है। इसके लिए आपको कुछ करना नहीं पड़ता। विकास की यह जीवन्त प्रक्रिया है जिसके लिए आप धन नहीं दे सकते। परमात्मा पैसे को नहीं समझते, यह तो मनुष्यों की सिरदर्दी है। परमात्मा को पैसे में कोई दिलचस्पी नहीं। तो उन लोगों से सावधान रहें जो विश्व समाप्त होने की भविष्यवाणी करके धन माँगते हैं।

मैंने आपको बताया, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना आपका अधिकार है। यह आपकी अपनी शक्ति है, आपकी अपनी आत्मा है। आप आश्चर्यचकित होंगे कि यही आत्मा आनन्द का स्रोत है। आपको कष्ट नहीं उठाने पड़ेंगे। यह विचार गलत है कि कष्ट उठाने आवश्यक हैं तथा क्योंकि ईसा ने आपके लिए कष्ट उठाए आपको भी उनसे अधिक कष्ट उठाने होंगे।

किस लिए हम कष्ट उठाएं? सर्वशक्तिमान परमात्मा आपके पिता हैं, वो करुणा के सागर हैं। कौन सा पिता चाहेगा कि उसके बच्चे कष्ट उठाएं? परमात्मा के नाम पर आपको कष्ट नहीं उठाने चाहिए। बस परमात्मा के सम्राज्य में प्रवेश कर जाइए। वहां आप आनन्दित एवं प्रसन्न हो जाएंगे। विश्व भर में आपके भाई बहन हैं। पचपन देशों में सहजयोग फैल रहा है। कहीं भी आप चले जाएयें वे आपको पहचान लेंगे। वे तुरन्त जान जाएंगे कि आप सहजयोगी हैं। सहजयोगी वह है जिसने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है और जो दूसरों को आत्मसाक्षात्कार दे सकता है, कुण्डलिनी उठा सकता है। परन्तु ऐसे व्यक्ति को परिपक्व होना चाहिए। उसे सहजयोग का ज्ञान होना चाहिए। सहजयोग में कोई रहस्य नहीं है। कोई विवशता नहीं है। यहां विवेकपूर्ण स्वतंत्रता है। विवेकहीन स्वतंत्रता यदि हो तो लोग उन्मत हो जाते हैं, पागल हो जाते हैं पश्चिमी देशों में यही हो रहा है। मैं नहीं जानती कि सहजयोग में आए बिना वे किस तरह अपने आघातों से छुटकारा पा सकते हैं?

तलियाती आकार में बहुत प्रसन्न हूं क्योंकि यहां बहुत से सहजयोगी हैं। यह अवश्य कुछ विशेष स्थान रहा होगा जिसके कारण लोग आध्यात्मिकता के प्रति इतने संवेदनशील हैं, सहजयोग के प्रति इतने संवेदनशील हैं कि इतनी तीव्र गति से उन्होंने आध्यात्मिकता अपना ली। मेरे विचार में तलियाती इस कारखाने को चलाने के लिए जब इटली से यहां आया होगा तो सम्भवत: उसने यहां चैतन्य महसूस किया होगा।

अब आपको सामूहिकता में सहजयोग में बढ़ना है। मैं जानती हूँ कि आप में से जिनको भी आत्मसाक्षात्कार नहीं मिला है वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे। परन्तु आपको गहनता प्रदान करनी होगी और गहनता तभी सम्भव है जब आप सामूहिकता में आएंगे। कटा हुआ नाखून कभी भी बढ़ नहीं सकता। सहजयोग जीवन्त संघटन है (Organism) है। यही कारण है कि सामूहिकता में ही आप बढ़ते हैं। परन्तु अब जो लोग आत्मसाक्षातकरी हैं, जिन्हें सहजयोग का ज्ञान प्राप्त हो गया है वे तलियाती से बाहर जाकर सहजयोग का प्रसार करें। हजारों लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के लिए एक ही व्यक्ति सक्षम है। आपमें शक्ति है। शक्ति अब आपको प्राप्त हो गई है। जिस प्रकार आप इसका आनन्द ले रहे हैं आपको चहिए कि अन्य लोगों को भी यह आनन्द प्राप्त करने में सहायता करें। जिस प्रकास आपका स्वास्थ्य सुधर गया है उसी प्रकार स्वास्थ्य सुधारने में अन्य लोगों की सहायता करें। यह कार्य अति सुगम है। तलियाती के समीप छः क्षेत्रों में जहां तक भी आप पहुंच सकें पहुँचे। सहज प्रचार मैं आप पर छोड़ती हूँ। इसके विषय में वाद विवाद अनावश्यक है। बस लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे दें। इससे माफिया के लोग भी सुधर जाएंगे। आप इसे अजमा कर देखें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सेंट पीटर्सबर्ग जनकार्यक्रम

31-07-1993

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। आरम्भ में हमें यह समझना है कि सत्य जो है वही है। हम इसे परिवर्तित नहीं कर सकते और न ही इस मानवीय चेतना पर इसे अनुभव कर सकते हैं। पूर्ण सत्य को जानने का समय आ गया है। बिना पूर्ण सत्य को जाने पृथ्वी पर विद्यमान भिन्न प्रकार की समस्यओं को नहीं समझ सकते। मेरी बात को आप एक वैज्ञानकि के खुले मस्तिष्क से सुनें। मैं जो भी कह रही हूँ उस पर आँखे बन्द करके विश्वास न करें। यदि यह प्रमाणित हो जाए तो इसे स्वीकार कर लें क्योंकि यह आपके हित में है। यह आपके देश के और पूरे विश्व के हित में है। बहुत सी चीजों में हम विश्वास करते हैं परन्तं इन्हें सत्य के रूप में अभी तक स्थापित नहीं कर पाए । उदाहरणार्थ ईसा मसीह परमात्मा के पुत्र थे, परन्तु यह प्रमाणित न हो पाया। तो कुछ लोग कह सकते है:" आप किस प्रकार कहते हैं कि वे परमात्मा के पुत्र थे?

अब समय आ गया है कि धर्म ग्रन्थों में लिखी हर बात को प्रमाणित किया जा सके और अमझा जा सके कि महान पैगम्बरों, सन्तों एवम् अवतरणों ने धर्मग्रन्थ लिखे थे। उन सबने एक ही बात कही। जब भली भांति समझकर हम जान लेंगे कि सत्य क्या है तो कोई भेद न रह जाएगा। तो मानवीय चेतना पर हमने अभी तक पूर्ण सत्य को नहीं पहचाना है परन्तु हमारे सृष्टा, हमारे पिता, सर्वशक्तिमान परमात्मा ने हमारे अन्दर ही इसका प्रबन्ध किया है। हमारी विकास प्रक्रिया में हमारे अन्दर ही सूक्ष्म प्रणाली की सृष्टि की गई है। यही प्रणाली हमें पूर्ण ज्ञान प्रदान करती है। सत्य यह है कि आप यह शरीर, मन, अहम् या बन्धन नहीं हैं। आप पावन आत्मा हैं। परन्तु आपको पुनर्जन्म लेना है, पक्षी की तरह से जो पहले अंडा होता है और फिर पक्षी बनता है। आप स्वंय को 'पुनर्जन्मित' या 'महान' प्रमाणित नहीं कर सकते क्योंकि हम सब समान हैं। पुनर्जन्म लेने के पश्चात आपमें एक नई चेतना विकसित होती है और अस्तित्व की भिन्न अवस्थाएं विकसित होती हैं जैसे अंडा तो जड़ होता है परन्तु पक्षी कहीं भी उड़ सकता है।

अत: इस घटना का घटित होना आवश्यक है। जब तक यह घटित नहीं हो जाता तो हमारे विश्वास अन्तत: हमें विश्वस्त नहीं कर पाएंगे। एक शक्ति है जो जागृत होने पर आत्मसाक्षात्कार का वास्तविक रूप प्रदान करती है। वास्तवीकरण ही महत्वपूर्ण है, बनना ही महत्वपूर्ण है।

दूसरे, सत्य का अर्थ है कि परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति ही सारा जीवन्त कार्य करती है जैसे फूलों का खिलना । आप इन फूलों को देखें ये सब चमत्कार है, क्या ऐसा नहीं है? आपका हृदय कौन चलाता है? चिकित्सक कहेंगे स्वचालित नाड़ी तन्त्र; परन्तु यह स्व कौन है? तो विज्ञान भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती। विज्ञान नहीं कह सकता कि आप पृथ्वी पर क्यों है? यह जीवन के लक्ष्य के विषय में हमें नहीं बता सकती। अत: हमें अर्न्तमुखी होना पड़ता है। परन्तु मैं यदि कहूँ कि अपनी दृष्टि को अन्दर रखें तो आप ऐसा नहीं कर सकते। तो जब जागृत होकर कुण्डलिनी छ: चक्रों को भेदती है तब यह घटना घटित होती है। यह आपके सारे चक्रों का पोषण करती है जिसके द्वारा आपकी बहुत सी शारीरिक, मानसिक, भावानात्मक और आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान हो जाता है।

कीव में मैं बहुत से सहजयोगियों से मिली। उन्होंने मुझे बताया कि वे 25 वर्षों से औषधियां सेवन कर रहे थे परन्तु इस घटना के घटित होने के पश्चात उन्होंने दवाई को छुआ तक नहीं। वे लोग यहां हैं। इस बात से वो बहुत प्रसन्न थे। उनमें से कुछ ने तो अन्य लोगों को भी ठीक किया है। केवल शारिरिक समस्याएं ही हमें कष्ट नहीं देती, कुछ ऐसे रोग भी होते हैं जिनका इलाज नहीं है। वे भी ठीक हो जाते हैं। कुछ मानसिक रोगी भी होते हैं, पागल भी होते हैं। कुछ मिर्गी रोग से पीड़ित हैं । भारत में ती डॉक्टरों को 'सहजयोग द्वारा इलाज' विषय पर एम. डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। आप अपनी तथा अन्य लोगों की समस्याओं को जा जाते हैं और आप अपना तथा अन्य लोगों का इलाज करना जान जाते हैं। आप यह भी जान जाते हैं कि कोन असली है और कौर नकली। सहजयोग में सभी कुछ स्पष्ट है, यह दिव्य विज्ञान है। अपने सारे कार्यकलापों को समझते हुए आप सहजयोग को कार्यान्वित करने लगते है।

उस दिन एक लड़का कहीं से आया और मुझ पर चिल्लाने लगा। बुरी तरह से सम्मोहित था, यह भी न जानता था कि वह क्या कर रहा है। किसी ने उसे सम्मोहित कर दिया

और वह मुझपर चिल्ला रहा था। मैं समझ न पा रही थी कि वह क्या कह रहा है? वह अत्यन्त हिंसक था। लोग मंत्र पढ़ते चले जाते हैं। यह पागलपन है। उनमें न तो शक्तियां हैं और न सूझबूझ। वे उन लोगों जैसे हैं जिन्हें तोते की तरह मंत्र रटने के लिए कह दिया गया हो। मानव अस्तित्व की यह कितनी बर्बादी है! वास्तव में मानव विकास का प्रतीक (Epitome of Evolution) है। परमात्मा के बनाए हुए जीवों में वह बहुमुल्य है। परन्तु मानव अपना मूल्य नहीं जानता। यही कारण है कि वह ऐसे लोगों के पास जाकर उन्हें धन देता है तथा उनके सम्मोहन में फंस जाता है।

कुण्डलिनी जब उठती है तो यह व्यक्ति को परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जोड़ती है। योग का अर्थ यही सम्बन्ध है। 'सह' अर्थात साथ और 'ज' का अर्थ है जन्मी। अर्थात वह आपके साथ जन्मी है और दिव्य शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करने का अधिकार आपको है। ज्यों ही यह घटित होता है आत्मा आपके चित्त में आ जाती है।

पहला परिवर्तन जो आप में घटित होता है कि आप वर्तमान में खड़े हो जाते हैं। प्राय: या तो आप भूतकाल में होते हैं या भविष्य में। परन्तु जब कुण्डलिनी उठती है तो यह विचारों के मध्य रिक्त समय की सृष्टि करती है जिसमें कोई विचार नहीं होता। आप पूर्णत: चेतन होते हुए भी कोई विचार नहीं होता। इसी को हम निर्विचार समाधि कहते हैं। निर्विचार चेतना में जब आप चले जाते हैं तो हृदय की शान्ति आपको प्राप्त हो जाती है। पूर्णत: शान्त होकर पूरे विश्व को नाटक की तरह साक्षी रूप होकर आप देखते हैं। आप समस्याओं से छूट जाते हैं, आप समस्याओं को देख सकते हैं परन्तु उनसे आपको घबराहट नहीं होती है और परमात्मा के आशीर्वाद से आप अपनी समस्याओं का समाधान कर लेते हैं। आप सहजयोगियों से पूछें कि उन्हें कितने आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं? वे मुझे लिखा करते थे," श्री माताजी, मुझे यह आशीर्वाद मिला, मुझे वह आशीर्वाद मिला" मैंने एक सहजयोगी से यह सब छापने के लिए कहा। एक महीने के बाद उसने मुझे बताया कि उसके पास इतने पत्र आ गए हैं कि उसे समझ में नहीं आता कि कौन सा छापे! मैंने कहा,"इन्हें भूल जाओ"

आत्मा पूर्ण ज्ञान का स्रोत है। हमारे हृदय में यह सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। और सभी मनुष्यों में एक ही प्रतिबिम्ब है। आत्मा के प्रकाश में सभी लोग एक ही चीज देखते हैं, एक ही चीज महसूस करते हैं। अपनी अंगुलियों के सिरों पर वे आदिशक्ति की सर्वव्यापी शक्ति को शीतल लहरियों के रूप में महसूस करते हैं अर्थात वे पूर्ण ज्ञान को महसूस कर सकते हैं। मान लो अभी आप ईसा के विषय में पूछना चाहते हैं, " क्या ईसा मसीह परमात्मा के पुत्र थे"? तुरन्त आपके हाथों में शीतल लहरियां आने लगेंगी। किसी शैतान व्यक्ति के विषय में यदि आप पूछेंगे तो आपको हाथोंपर चुभन होने लगेगी, यह भी हो सकता है कि अंगुलियों पर जलन हो या छाले पड़ जाएं। आप अपने तथा अन्य लोगों के रोगों तथा उनके चक्रों की समस्याओं के विषय में भी जान सकते हैं।

आत्मा के प्रकाश में आमका चित्त प्रकाशित हो जाता है। किसी व्यक्ति को जब आप देखते हैं तो प्राय:उससे सम्बन्ध आप नहीं समझ पाते। परन्तु जागृत होकर कुण्डलिनी आपमें अबोधिता की अभिव्यक्ति करती है। हमारे अन्त: स्थित अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती। यह शाश्वत है। परन्तु हमारी गलतियों के कारण इस पर कुछ बादल छा जाते हैं। आत्मा का प्रकाश जब चित्त पर पड़ता है तो चित्त पवित्र हो जाता है, चित्त में वासना और लालच नहीं रहता। आपका क्रोध कम हो जाता है तथा व्यर्थ के मोह लुप्त हो जाते हैं। आपके सभी दुर्व्यसन छूट जाते हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार है: मान लो अंधेरा है। मैं जिद्दी व्यक्ति हूँ और हाथ में सांप पकड़े हुए हूँ। आप यदि मुझे कहें कि तुम्हारे हाथ में सांप है तो जब तक वह सांप मुझे काट नहीं लेता, मैं सम्भवत: आप पर विश्वास न करूं। परन्तु थोड़ा सा प्रकाश हो जाए तो मैं सांप को देख सकूंगी और किसी को बताना नहीं पड़ेगा और मैं स्वयं ही सांप को फेंक दूंगी। इसी प्रकार विवेक के माध्यम से हम समझते हैं कि ये चीजें विनाशकारी हैं और हममें इनसे मुक्त होने की शक्ति है।

इस प्रकार मानव में परिवर्तन होने लगता है। उसकी चेतना सामूहिक चेतना में परिवर्तित हो जाती है, जैसे क्षुद्र जगत का त्रिभुवन में परिवर्तित हो जाना या हम कह सकते हैं कि बूंद सागर बन जाती है हम सब महसूस करते हैं कि हमारा सम्बन्ध एक जीवन्त रचना से है। सुसंगठित जीवन्त शरीर से। एक अंगुली को यदि चोट लगे तो पूरा शरीर प्रभावित होता है। तो आपको महसूस होने लगता कि पूरा विश्व आपका अपना है। पहली बार मैं जब यहां आई तो 25 सहजयोगी मेरे साथ आए। मैंने उन्हें नहीं बुलाया था। वे स्वयं आए थे। कहने लगे, "श्रीमाता जी हमें यह कार्य करना ही था क्योंकि हमारे पूर्वजों ने रूस के लोगों को बहुत हानि पहुंचाई थी।" तो हर स्थान पर आपके प्रिय भाई बहन बन जाते हैं और आपसी सम्बन्ध भी बहुत पवित्र बन जाते हैं। सहजयोग में ऐसे लोगों का पूर्णाभाव है जो किसी के पति या पत्नी के साथ दौड़ जाते हैं। यहां लोग देवदूत सम बन जाते हैं। महानतम चीज यह है कि आप आनन्द का स्रोत बन जाते हैं, आत्मसाक्षात्कार के पश्चात सभी आनन्द का स्रोत बन जाते हैं तथा आनंद सागर का सृजन होता है। सभी लोग आनन्द सागर में गोते लगाते हैं। इसके लिए आपको कष्ट नहीं उठाने पड़ते, हिमालय पर नहीं जाना पड़ता

और न ही सिर के भार खड़ा होना पड़ता है। इसके लिए आपको कोई पैसा नहीं खर्चना पड़ता। ये फूल प्रदान करने के लिए हमने पृथ्वी माँ को कितना धन दिया? कोई एहसान भी नहीं है। यह आपकी शक्ति है जो आपके अन्दर स्थित है और जिसके कारण आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं। एक बार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात आप अन्य लोगों को भी आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। आपको शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। यह सब बड़ा अद्‌भुत लगता है। **यदि ये यन्त्र (माइक) अपने स्रोत से न जुड़ा हुआ होता तो यह व्यर्थ है। इसी प्रकार हम भी यदि अपने स्रोत से जुड़े हुए नहीं हैं तो हमारी कोई पहचान नहीं है। हम इस पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए? परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए, उसके आशर्वाद, उसकी सुरक्षा, उसके प्रेम का आनन्द लेने के लिए।** मुझे विश्वास है कि आज यह घटित हो जाएगा। आप सबको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा।❑❑

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

○○○

सेंट पीटर्सबर्ग जनकार्यक्रम

दूसरा दिन

01-08-1993

कल मैंने आपको बताया था कि पूर्ण सत्य को किस प्रकार प्राप्त करते हैं। हमारे अन्दर पहले से ही एक अति सूक्ष्म प्रणाली विद्यमान है जो इसे कार्यान्वित करती है और हम आत्मचेतना में उतर जाते हैं। मैंने आपको यह भी बताया था कि आत्मा पूर्ण सत्य का स्रोत है। जब यह हमारे चित्त में अभिव्यक्त होती है तो हमें पावन कर देती है और हमारा चित्त चुस्त हो जाता है और यही हमारे अन्दर आनन्द का स्रोत है। यह घटना घटित होने के पश्चात आपमें एक नई चेतना, निर्विचार चेतना विकसित हो जाती है। सामूहिक चेतना आपकी चेतना का एक नया आयाम है। यह सब आप अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर महसूस करते हैं। संस्कृत में इसे बोध कहते हैं जहां से बुद्ध शब्द का उद्‌भव हुआ। अतः आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति 'बुद्ध' है।

आज मैं सोचती हूँ कि आपको बताऊँ कि किस प्रकार यह आपके चक्रों पर कार्य करती है। जैसा इस चार्ट में दिखाई दे रहा है, हमारा पहला चक्र लाल रंग का है। यह हमारी अबोधिता का चक्र है कल मैंने आपको बताया था कि हमारी अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती और यह हमारे चित्त में प्रवेश कर जाती है। हम अबोध बन जाते हैं और हमारे चित्त में वासना एवम् रोग नहीं रहता। हम बच्चों सम हो जाते हैं। ईसा ने कहा है कि परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए आपको बच्चों सम् होना पड़ेगा । तो मानसिक गतिविधियों के फलस्वरूप जो चालाकी हमने अपना ली है वह छूट जाती है और अबोधित हमारी रक्षा करती है। यह हमारा पथ प्रदर्शन करती है और इस प्रकार से हमारी देखभाल करती है कि हम उचित-अनुचित को पहचान जाते हैं। किसी भी प्रकार से ऐसा कुछ करने का प्रयत्न हम नहीं करते जो हमारे लिए अहितकर हो या विनाशकारी हो। अपने पावित्र्य (कौमार्य) का हम सम्मान करते हैं। हम अत्यन्त शक्तिशाली एवम् आत्मसम्मानित बन जाते हैं। जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण अत्यन्त पवित्र हो जाता है और यह कार्य अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक होता है। शिशु सम् आनन्द हम प्राप्त करते हैं।

दूसरे चक्र को स्वाधिष्ठान के नाम से जाना जाता है। यह हमारी सृजनात्मकता का चक्र है। रूस में अब बहुत से कलाकार, चित्रकार, एवम् मूर्तिकार हैं जो अपनी सृजनात्मकता से कला की सृष्टि करते हैं। परन्तु हो सकता है कि उनकी कला शाश्वत् न हो। जर्मनी के कलाकार की कलाकृति को हो सकता है कि इटली के कलाकार पसंद ना करें और इटली के कलाकार द्वारा सृजित कलाकृति को रूस के कलाकार। परन्तु इतने वर्षों के पश्चात भी आज जो कलाकृतियां विद्यमान हैं वह आत्मसाक्षात्कारी लोगों द्वारा बनाई गई हैं। मोनालिसा, आप जानते हैं, की सभी लोग प्रशंसा करते हैं क्योंकि इसमें चैतन्य है। आप यदि सिस्टाईन चर्च (Sistine Chapel) में जाएं तो वहां एक सुन्दर कुन्डालिनी के साथ ईसा मसीह खड़े हुए हैं। पूरा दृश्य अत्यन्त अद्‌भुत है क्योंकि यह माइकलएन्जेलो (Michaelangelo) ने बनाई थी और वह आत्मसाक्षात्कारी

व्यक्ति था। उसने बहुत कष्ट उठाए। लोगों ने उसे नहीं समझा। यहां रैमब्रेन्ट (Rembrant) की छब्बीस (26) तस्वीर हैं जिन्हें देखने के लिए विश्व भर से लोग आते हैं इसी प्रकार महान संगीतज्ञ हैं जैसे मोजार्ट (Mozart) स्ट्रास (Strauss) जिसने 'अलविदा पीटर्सबर्ग' (Goodbye Petersburgg) जैसी सुन्दर कृति लिखी। यह सब संगीतज्ञ आत्मसाक्षात्कारी लोग थे। आपके देश में महान लेखक भी हुए हैं जिन्होंने बहुत सुन्दर पुस्तकें लिखी हैं जिन्हें आप समझ सकते हैं। रूस में बहुत से लेखकों ने ऐसी आध्यात्मिक पुस्तकें लिखी हैं जहां उन्होंने भिन्न चरित्रों के अन्तर्दर्शन को दर्शाया है। मुझे बताया गया कि आपके देश में जन्मे एक महान् सन्त का बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है, और यह भी बताया गया कि वह मेरे जैसा लगता था। तो इन सन्तों तथा अन्य लोगों को वास्तव में अपने जीवन काल में ही दिव्य सृजनात्मकता प्राप्त हो गई और वे महान पैगम्बर तथा दृष्टा बन गए। बहुत से दृष्टाओं ने सहजयोग के विषय में लिखा है कि यह घटित होगा। इंग्लैण्ड में विलियम ब्लैक हुए। भारत में भी बहुत से लोगों ने सहजयोग की भविष्यवाणी की है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी सहजयोग के विषय में लिखा। प्राचीन काल में नाड़ी ग्रंथ में स्पष्ट भविष्यवाणी की गई कि कब सहजयोग आरम्भ होगा और कब लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करेंगे। सोचते हुए हम इस चक्र का बहुत उपयोग करते हैं। जब यह चक्र आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है तो विचार बहुत कम हो जाते हैं। यह हमें बहुत से शारीरिक रोग ठीक करने में भी सहायक होता है। यह चक्र यदि ज्योतित हो जाए तो जिगर, रोग, अग्नाशय (Pancreas) के कारण हुए मधुमेह (Diabetes) रोग, रक्त कैन्सर (Leukemia) अति-श्वेत-रक्तता, कब्ज (constipatition) एवम् गुर्दा (Kidney) रोग आदि सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है।

हमारे तीसरे चक्र का उद्भव दूसरे (स्वाधिष्ठान) चक्र से होता है। यह नाभि चक्र कहलाता है जो शरीर में सूर्य चक्र पर कार्यान्वित है। नाभि चक्र में यदि खराबी हो तो व्यक्ति को सभी प्रकार के पेट के रोग, पेट का कैन्सर तक, हो सकते हैं। परन्तु यदि यह प्रकाशित हो जाए तो इस चक्र की शारीरिक समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है इस चक्र को खराब करने वाली बुरी आदतें, जैसे मद्यपान, नशा सेवन, छूट जाती है। कुछ लोगों को बहुत अधिक खाने का लालच होता है और कुछ बिल्कुल खाना ही नहीं चाहते । यह चक्र जागृत होने पर व्यक्ति अत्यन्त सन्तुष्ट हो जाता है। तब वह सत्य-साधना की ओर निकल पड़ता है। धन तथा सांसारिक वस्तुओं की अधिक चिन्ता नहीं करता। वह सोचने लगता है कि इनसे ऊपर भी तो कुछ होगा। तब एक नया मानव-वर्ग जन्म लेता है जिन्हें हम सत्य साधक कहते हैं, जैसे आप लोग। तो एक नया मार्ग-जिसे आप मध्य-नाड़ी मार्ग कहते हैं- जागृत हो जाता है और लोग साधना में लग जाते हैं।

पूरे विश्व में लोग खोज कर रहे हैं परन्तु रूस में विकसित लोग हैं और वो जानते हैं कि क्या खोजना है । उनमें सत्य-संवेदना है। इसी प्रकार युक्रेन, रूमानियां, बल्गेरिया, पौलैंड और हंगरी के लोगों में भी सत्य संवेदना है। कल किसी ने मुझसे प्रश्न किया, " इन लोगों के विषय में आप क्या सोचती हैं जो हरे रामा-हरे कृष्णा गा रहे हैं?" मैं सोचती हूँ कि केवल मूर्ख ही ऐसे बन सकते हैं। केवल हरे रामा-हरे कृष्णा' रटते रहने से आप किस प्रकार मानवीय चेतना के नये आयाम को पा सकते हैं? श्री कृष्ण ने गीता में ऐसा कभी नहीं कहा, कुरान या कुछ अन्य पढ़ कर क्या आप उत्थान पा सकते हैं? मान लो कोई डॉक्टर आपको नुस्खा देता है कि सिर दर्द के लिए एनासिन लो; और आप रटे चले जाते हैं-'एनासिन लो, एनासिन लो ! क्या आपका सिर दर्द ठीक हो जाएगा? आपको दवाई लेनी पड़ेगी, केवल रटने से या स्मरण करने से कोई लाभ नहीं। कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात को समझ सकता है। श्री कृष्ण ने कभी नहीं कहा कि आप भिखारियों की तरह से रहें। वास्तव में वे कुबेर हैं। उनका एक मित्र दरिद्र था, उसके लिए उन्होंने सोने का घर बनवाया । तो श्री कृष्ण का नाम लेने वाला कोई व्यक्ति भिखारियों की तरह से किस प्रकार आचरण कर सकता है? यह तो श्री कृष्ण के बिल्कुल विपरीत है।

इसी प्रकार के बहुत से लोग हैं जिन्हें अमेरिका में बहुत सा धन दिया गया। परन्तु वे कुण्डलिनी तथा चक्रों के विषय में कुछ नहीं जानते; वे नहीं जानते कि कुण्डालिनी किस प्रकार उठायी जाती है। नशीले पदार्थ रखने तथा छोटे बच्चों का अपहरण करने के लिए उन्हें पकड़ा गया। वैभव के स्वामी, श्री कृष्ण के नाम पर गलियों में भीख माँगते देख मुझे लज्जा आती है।

इन लोगों के कारण पश्चिम में बहुत से लोगों का उत्थान रुक गया है, उन्हें धन दे-दे कर जिज्ञासु दिवालिया हो गए हैं, उनकी स्थिति पागलों सी हो गई है। टी. एम. (Transcendental Mediatation) नामक एक अन्य भयानक चीज है। मुझे आशा है कि यह अभी तक यहाँ नहीं पहुँची । शरीर को पृथ्वी से तीन फुट ऊँचा उठाने के लिए वे लोगों से 6000 पौंड लेते थे। रूस में ऐसी मूर्खता को कोई स्वीकार नहीं करेगा। क्या आवश्यकता है? उछलने से उनके कूल्हे टूट गए और टी. एम. करवाने वाले लोगों को इसका खामियाज़ा देना पड़ा। अत: अबोधिता से ही विवेक विकसित होता है। तब आप विवेक-अविवेक में अन्तर जान सकते हैं।

इसके पश्चात मध्य हृदय चक्र है इसका बायां और दायां भाग भी है। मध्य हृदय चक्र में यदि खराबी हो तो असुरक्षा (भय) की भावना हृदय में आ जाती है, विशेषकर महिलाओं में यदि मध्य हृदय चक्र खराब हो और उनमें असुरक्षा की भावना हो तो उन्हें स्तन-कैंसर हो सकता है। दायें चक्र में यदि बाधा हो व्यक्ति को अस्थमा रोग हो सकता है और यदि बायें हृदय में पकड़ हो तो हृदय रोग हो सकता है। मध्यहृदय जब प्रकाशित हो जाता है तो सुरक्षा की भावना आ जाती है। आपके शरीर में विद्यमान रोग प्रतिकारक जो कि रोगों से मुकाबला करते हैं, अत्यन्त चुस्त हो जाते हैं। बारह वर्ष की आयु तक उरोस्थी के नीचे रोग प्रतिकारकों (Anti-Bodies) का सृजन होता है। तत्पश्चात इन्हें पूरे शरीर में फैला दिया जाता है। यह उरोस्थी (Sternum) दूरस्थ नियंत्रण (Remote Control) की तरह रोग प्रतिकारकों को आक्रमण का मुकाबला करने की सूचना देती है। जब भी हम भयभीत होते हैं ता हमारा हृदय तेजी से धड़कने लगता है और हमारी उरोस्थी कार्यशील हो जाती है।

आत्मसाक्षात्कार के पश्चात जब यह चक्र प्रकाशित होता है तो हमारे अन्दर सुरक्षा की भावना जागृत होती है। अब आप निर्भय हो जाते हैं। किसी के प्रति आप आक्रामक नहीं होते, निर्भयता पूर्वक ऊर्जस्वी हो जाते हैं, अत्यन्त करुणामय। आपका सरोकार स्वयं से हट कर अन्य लोगों के प्रति होता है, अन्य लोगों के लिए आप में प्रेम उमड़ता है। जो लोग कभी आपके शत्रु थे, वे भी अच्छे मित्र बन जाते हैं । अचानक आप पाते हैं कि सभी शत्रु आपके मित्र बन गए हैं। आप यदि आक्रामक थे तो अत्यन्त भद्र एवम् विनम्र बन जाते हैं।

अगला चक्र 'विशुद्धि' चक्र कहलाता है। रूस और यूक्रेन के लोगों को इसकी बहुत समस्या है, इतनी अधिक कि वहाँ सामूहिकता से मुझे भी यह समस्या हो गई। इसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति को हृदयशूल (angina) स्पोंडिलाइटिस (spondylitis) एवं आलसी अंग-रोग हो सकते हैं व्यक्ति अत्यन्त उदास हो जाता है और फिर भूर्त। दायीं विशुद्धि में यदि पकड़ हो तो हम अत्यन्त आक्रामक हो जाते हैं। बहुत ऊँचा बोलते हैं और लोगों पर चिल्लाते हैं, अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के। कुछ बच्चे भी अति हेकाड़ एवम् अभद्र बन जाते हैं। वे मुझ से प्रश्न पर प्रश्न कर सकते हैं। ये सब दुर्गुण दायीं विशुद्धि की खराबी से होते हैं। दायीं विशुद्धि जब जागृत हो जाती है तब आप अति मधुर हो जाते हैं अत्यन्त सामूहिक हो कर आपमें अन्य सहयोगियों के प्रति अपनापन आ जाता है। अपना सर्वस्व आप दूसरों को देना चाहते हैं, सबसे मधुर सम्बन्ध बनाना चाहते हैं । अपने आत्मसाक्षात्कार से ही आप सन्तुष्ट नहीं हो जाते, और लोगों को भी आत्मसाक्षात्कार देना चाहते हैं। आप को लगता है कि हमें इतनी बहुमूल्य निधि मिल गई है, अब इसे संचरित करना चाहिए।

छठा चक्र अगन्य (आज्ञा)- महत्वपूर्ण है। मस्तक पर जहाँ दृक-तन्त्रिकाएं एक दूसरे को काटती हैं वहाँ दृष्टि बिन्दु पर यह स्थिति है। बाई आज्ञा की समस्या यदि हो तो इसका कुप्रभाव आँखों पर पड़ता है। हमारी आँखों का आकार बढ़ सकता है तथा दूर-दृष्टि कम हो सकती है। मानसिक रोगियों, पागलों में बाई आज्ञा की समस्या बहुत अधिक होती है। तो बाई आज्ञा की पकड़ सुझाती है कि व्यक्ति को किसी प्रकार की भूत बाधा है। हो सकता है कि कोई आँखों से या स्वाधिष्ठान के माध्यम से सम्मोहित करके ऐसे व्यक्ति को वास्तव में पागल कर दे। उस दिन मैंने मरिया देवी क्रिस्टोज के एक अनुयायी को देखा, वह पूरी तरह भूत बाधित था। वह अत्यन्त आक्रामक था और ऐसा कुछ कह रहा था जिसे कोई न समझ पाया। अन्ततः वह पागल हो गया। अतः व्यक्ति को गुरुओं तथा पुस्तकों के विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि इनके कारण बाई आज्ञा तथा स्वाधिष्ठान की समस्या हो सकती है।

बाई आज्ञा चक्र यदि प्रकाशित हो जाए तो व्यक्ति अपनी लौकिक आंखों से चैतन्य देखने लगता है आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति पर आप प्रकाश को भी देख सकते हैं । इन्होंने आपको फिल्म दिखाई है, मैं सोचती हूँ कि कैमरे की भी बाई आज्ञा प्रकाशित है। भारत में एक व्यक्ति था जो हीरे इत्यादि प्रकट कर देता था। मूर्ख लोगों ने उसे परमात्मा मान लिया। वह लोगों को सम्मोहित कर लेता था परन्तु कोई समझ न पाता था। कुछ माह पूर्व सरकारी अफसर वहाँ गए। उन्होंने चार कैमरे लगा दिए। इन बड़े अफसरों को भी उसने सम्मोहित कर दिया परन्तु कैमरों को सम्मोहित न कर पाया। कैमरे ने उसे पकड़ लिया कि किस प्रकार उसने दूसरे व्यक्ति से सोने का हार लिया, किस प्रकार वह व्यक्ति हार लेकर आया, किस प्रकार उसे वह हार दिया। हमारे पास उसका वीडियो भी है। मेरे पास वह टेप है। तो ये कैमरे बहुत ही अद्भुत हैं। मैंने जो तस्वीरें देखी हैं वह प्रायः सर्वसाधारण लोगों या बच्चों द्वारा ली गई हैं। परन्तु इसका वर्णन नहीं हो सकता। तो बाई आज्ञा ठीक हो जाने पर आप देखने लगते हैं कि व्यक्ति सन्त है या नहीं। आप समझ सकते हैं कि कोई सत्य है या असत्य और आपका आचरण अत्यन्त गरिमामय तथा शानदार बन जाता है। किसी पागल की तरह आप वर्ताव नहीं करते। सभी कुछ अच्छा हो जाता है। आपका संगीत, आपकी उछल कूद, आपका नृत्य सभी कुछ शालीन हो जाता है। न कोई चिल्लाहट रहती है और न कलाबाजियाँ, केवल आपके आनन्द की अभिव्यक्ति मात्र रह जाती है। बाई आज्ञा अत्यंन्त अन्तर्बेधी है। छोटे-छोटे बच्चे इसे बहुत अच्छी तरह समझते हैं । मैं एक बच्चे को जानती हूँ जिसने एक लामा के पास जाकर कहा, "तुम आत्मसाक्षात्कारी नहीं हो, यहां बैठकर सबको अपने सामने झुकने को कहने का अधिकार तुम्हें नहीं है"। तो व्यक्ति तुरन्त जान जाता है कि पाखंडी कौन है

सामने का (दायां) आज्ञा चक्र भी बहुत महत्वपूर्ण है। हम यदि क्षमा नहीं करते हो यह खराब हो जाता है और यदि बहुत अधिक सोचते हैं तो भी यह समस्याएं खड़ी करता है। बहुत अधिक सोचने पर यह हमारे चेतन मस्तिष्क पर आक्रमण कर देता है और आप पागलों की तरह सोचने लगते हैं। मस्तिष्क की बहुत अधिक गतिशीलता, ऐसे लोगों में घृणाभाव आ जाते हैं। अब एक नया रोग आ गया है जिसमें व्यक्ति रेंगने वाले व्यक्ति-सा हो जाता है जैसे मछलियां-बड़ी मछलियां। ये लोग अपने हाथ-पांव नहीं चला सकते, इनका केवल मस्तिष्क चलता है, ये चल भी नहीं सकते केवल रेंग सकते हैं अमेरिका में ये रोग आम हो गया है, तो बहुत अधिक सोचना, अत्याधिक भविष्य वादी दृष्टिकोण व्यक्ति की आज्ञा को खराब करता है। आपका स्वभाव बहुत आक्रामक हो जाता है। हिटलर की अत्यन्त खराब दाईं आज्ञा थी उसका सारा दायां भाग ही खराब था। कहते हैं कि दलाई लामा उसका गुरु था। ये लामा लोग दाईं ओर के होते हैं-अत्यन्त आक्रामक। यदि आपका दायां भाग खराब हो, विशेषकर के आज्ञा, तो आप अत्यन्त अभद्र, अहंकारी एवं अशिष्ट हो जाते हैं। आप सभी लोगों की गलतियां देखने लगते हैं और सभी को नियंत्रित करने लगते हैं, किसी चीज का आप आनन्द नहीं ले सकते, कोई बात आपके मस्तिष्क में नहीं जाती। अन्ततः हम देखते हैं कि इन चक्रों में किसी भी प्रकार का असन्तुलन अत्यन्त भयानक होता है।

अन्तिम चक्र सहस्रार कहलाता है। कहते हैं कि इसमें एक हजार पखुड़ियां होती है। बाइबल में लिखा है कि मैं आपके सम्मुख शोलों की जुबान में प्रकट हूंगा। सहस्रार जब प्रकाशित होता है तो एक हजार नाड़ियां (डॉक्टरों के अनुसार यह 988 हैं परन्तु वास्तव में ये 1000 हैं) शोलों की तरह प्रकाशित हो जाती हैं। ये इन्द्रधनुषी रंगों में चमकती हैं। ये अत्यन्त शान्ति प्रदायक एवम् शीतल होती हैं-शोलों से बिल्कुल विपरीत। जब कुण्डलिनी इसमें प्रवेश करती है तो मस्तिष्क तालू भाग से खुल जाता है।

तो जो ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह परस्पर सम्बन्धित ज्ञान है। यह अत्यन्त सीमित ज्ञान भी है। जब आत्मसाक्षात्कार घटित होता है तो, क्योंकि सहस्रार पर परमात्मा की कृपा वर्षा होती है, आप अत्यन्त ज्ञानशील हो जाते हैं, सूक्ष्म चीजों को आप अविलम्ब देखने लगते हैं। सामान्यतः व्यक्ति सूक्ष्म चीजें नहीं समझ पाते परन्तु आत्मसाक्षात्कार के पश्चात आप अत्यन्त शान्त एवम् आनन्दमय हो जाते हैं। आपकी नाड़ियों से चैतन्य प्रवाहित होने लगता है और अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप पूर्ण सत्य को जान सकते हैं। सहस्रार मुख्य समस्या थी। अब यह खुल गया है और फलस्वरूप सामूहिक आत्मसाक्षात्कार घटित हो रहा है।

संक्षिप्त रूप में मैंने आपको भिन्न चक्रों के विषय में बताने का प्रयत्न किया है। सहस्रार चक्र का गुण यह है कि आप पूर्णसत्य को अपनी अंगुलियों के सिरों पर जान जाते हैं। यह वास्तव में, मैं कहना चाहूँगी, आपके जीवन की एक महान घटना है कि आप आत्मसाक्षात्कार, पुनर्जन्म प्राप्त कर लेते हैं यह मात्र भाषण या प्रवचन नहीं है। आप वास्तव में इसे पा लेते हैं, इसका अनुभव करते हैं और इसे कार्यान्वित कर सकते हैं तो परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करना, बिना विचारों में डूबे उसके आशीर्वादों का आनन्द लेना आपके जीवन का लक्ष्य है।❑❑

परमात्मा आपको धन्य करें।

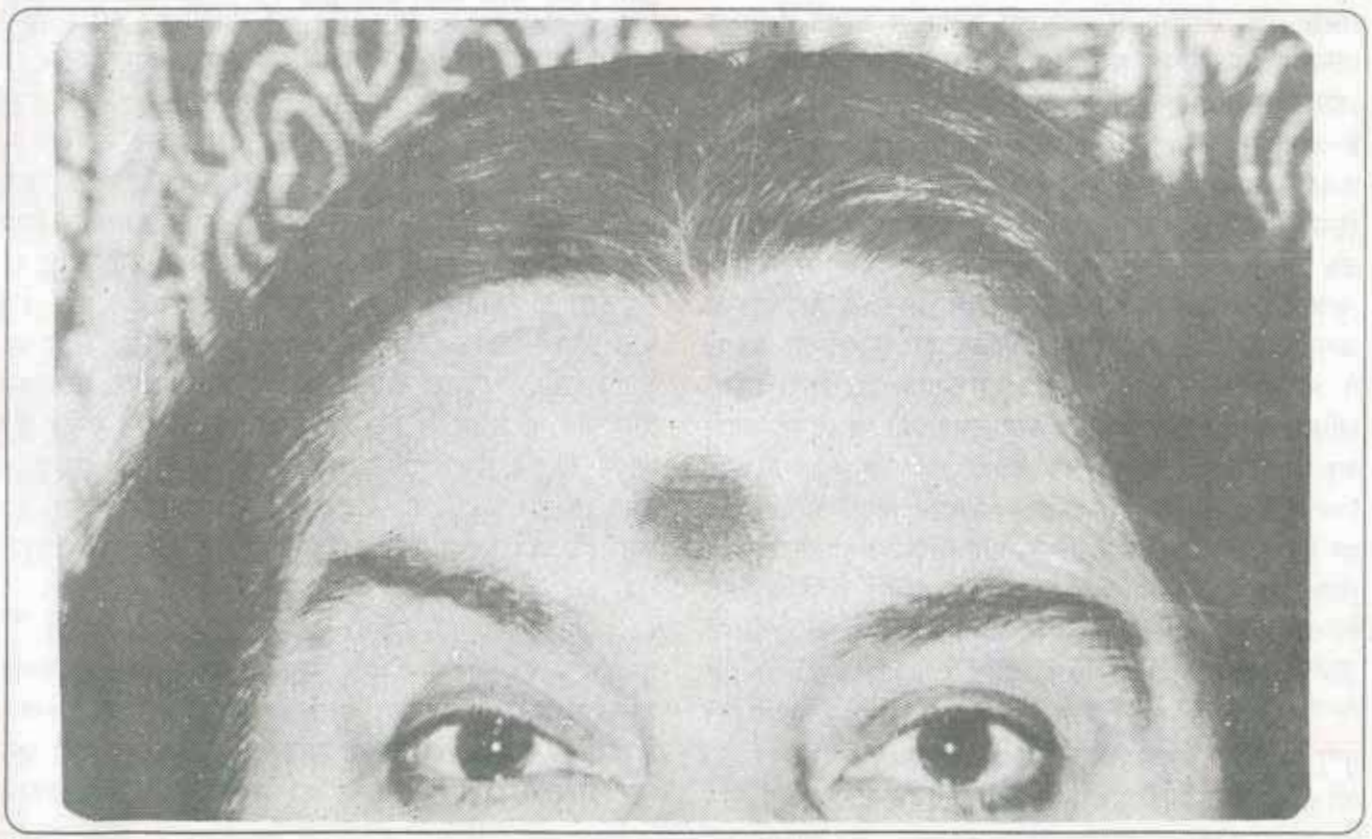

जन कार्यक्रम

मास्को 06-08-1993

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। आरम्भ में ही हमें समझ लेना चहिए कि सत्य जो है वही है- इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। दुर्भाग्यवश हम सत्य को मानवीय चेतना पर जान भी नहीं सकते। यदि पूर्ण सत्य को हमने जान लिया होता तो हमारे लिए किसी भी प्रकार की समस्याएं न होती। हमने केवल सुना है कि हमारे अन्दर एक अत्यन्त सूक्ष्म यन्त्र है जो परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से हमारा सम्बन्ध जोड़ता है। इसके बिना हम सत्य को नहीं जान सकते। वास्तव में यह एक घटना है, स्वत: घटित होने वाली घटना । इसे हम अपने विकास की जीवन्त प्रक्रिया भी कह सकते हैं। तो इस स्थिति तक पहुँचने के लिए हमारे साथ कुछ और भी घटित होना आवश्यक है। यह विशेष समय है और यह आपमें भी घटित हो जाएगा। इसके घटित होने पर सर्वप्रथम आपका स्वास्थ्य सुधर जाता है और स्वास्थ्य सम्बन्धी आपकी समस्याओं का समाधान हो जाता है। यहां बहुत से लोग बैठे हैं, सहज योग में आने के पश्चात जिनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का समाधान हो गया। इसी कारण से रूस में पहली बार सहजयोग आया।

इसके लिए आपको पैसा नहीं देना पड़ता। ये लोग नहीं समझते कि परमात्मा पैसे को नहीं जानते, वे सोचते हैं कि वे परमात्मा को खरीद सकते हैं। यह बिल्कुल गलत विचार है। मैं आप को सत्य बताती हूँ कि परमात्मा नहीं जानते कि पैसा क्या है और बैंक क्या है । इन फूलों को आप देखें, ये पृथ्वी माँ के चमत्कार हैं। इनके लिए हमने पृथ्वी माँ को कितना धन दिया है? यह एक जीवन्त प्रक्रिया है और मानव होने के नाते यह स्थिति प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार आप सबको है। सहजयोग से बहुत से मानसिक रोग भी ठीक हो गए हैं। यह आपकी अपनी शक्ति है, अपनी शक्ति, इसे कार्यान्वित कर लें ये आपमें अन्तर्निहित है। केवल इसे जागृत करना है। जितने अधिक जागृत आप होंगे आप अन्य लोगों को भी जागृति प्रदान कर सकेंगे।

अधिकतर धर्मग्रन्थों मे इन सभी घटनाओं की भविष्यवाणी की गई है। पूर्ण सत्य का ज्ञान न होने के कारण मानव परस्पर झगड़ रहा है और एक दूसरे के लिए समस्याएं खड़ी कर रहा है। ऐसे लोगों का हम विश्वास करना चाहते हैं जो पागल हैं और आपको भी पागल बनाना चाहते हैं । मुझे बताया गया है कि कोई महिला कह रही है कि नवम्बर को सभी लोगों की मृत्यु हो जाएगी: पूर्ण विश्व नष्ट हो जाएगा। ऐसी बेवकूफी ! वास्तव में हँसी आती है। परन्तु आप नहीं जानते कि ऐसे लोग बहुत बड़ा खतरा हैं। किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में आता है कि हम नष्ट होने वाले हैं। 40 वर्ष पूर्व भारत में भी एक व्यक्ति था जो ऐसा ही कहा करता था। उसकी मृत्यु हो चुकी है । लोग अब भी वह बात कहे जा रहे हैं, परन्तु कुछ भी नष्ट नहीं हुआ। अमेरिका में भी इसी प्रकार की बेपकूफी भरी बातें करने वाला व्यक्ति था जिसके अपने सभी युवा अनुयायिओं को सम्मोहित कर दिया और उन्हें बताया कि अमुक दिन सभी लोग समाप्त हो जाएंगे। परन्तु कोई भी समाप्त नहीं हुआ। तब उसने उस स्थान में आग लगा दी और अपनी तथाकथित भविष्यवाणी को प्रमाणित करने के लिए सभी को मौत के घाट उतारने का प्रयत्न किया। ऐसे लोगों का क्या लाभ है यह मेरी समझ में नहीं आता। वे या तो धन इकटठा करना चाहते है या लोगों को मारना चाहते हैं। कहीं हिटलर तो उनके मस्तिष्क में नहीं घुस गया जिसके कारण वे विश्व को नष्ट करना चाहते हैं? मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपके पिता, सर्वशक्तिमान परमात्मा, प्रेम एवं करुणा के सागर हैं। अत्यन्त प्रेम से उन्होंने विश्व की सृष्टि की है। आप को भी उन्होंने अत्यन्त सावधानी एवम् सुकोमल प्रेम पूर्वक बनाया है। वह परमात्मा किस प्रकार आपको और इस विश्व को नष्ट होने देंगे? किस प्रकार एक पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा कर सकता है? हमें समझना चाहिए कि इस प्रकार की बातों के पीछे कुछ पागलपन है या कोई पागल है जो यह भयावह कार्य करता है। अत: अपने बच्चों की रक्षा करने का प्रयत्न करें। इस प्रकार के बहुत से लोग हैं। वर्ष 1970 से मैं इनके विषय में बता रही हूँ कि किस प्रकार ये सच्चे एवं वफादार लोगों का अपने स्वार्थ के लिए दुरूपयोग कर रहे हैं। सौभाग्यवश अब इनमें से अधिकतर का पर्दाफाश हो चुका है। फिर भी खुम्बों की तरह से यहां वहां कुछ लोग निकल आते हैं। जो व्यक्ति आपको ऐसी कहानियां सुनाए उसका विश्वास न करें। परमात्मा के नाम पर जो आपसे पैसा मांगे तो समझ लें कि वह धोखेबाज है। ईसा मसीह को आपने कितना पैसा दिया? उन्हें तो 30 रुबल में बेच दिया गया। तो इस प्रकार की बेवकूफी की बातें करने वालों का अनुसरण नहीं किया जाना चाहिए। अपने विवेक का उपयोग करें।

तो सच्चा गुरु आपको क्या बताएगा? वह कहेगा कि तुम्हें सत्य को जानना है और परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करनी है। वह आपमें पूर्ण विश्वास करेगा और आपको प्रेम करेगा ताकि आपकी रक्षा की जा सके और आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो सके। पहली

चीज जो आपको प्राप्त होनी चाहिए वह है आपकी मानसिक शान्ति। आपका गुरु यदि आपको बताता है कि अमुक तिथि तक आप समाप्त हो जाएंगे तो किस प्रकार आप मानसिक शान्ति प्राप्त कर सकते हैं? कभी-कभी तो ये लोग अत्यन्त भयावह होते हैं। यदि आप किसी सच्चे सन्त को पढ़े तो वह आपको बताएगा कि परमात्मा से एकाकारिता प्राप्त करना ही उसके जीवन का लक्ष्य है। वे यदि सच्चे एवम् वास्तविक सन्त हैं तो वे आपको आत्मा बनने के लिए कहेंगे। वे कभी नहीं कहेंगे कि आप नष्ट होने वाले हैं, वे आपको बताएंगे कि आप द्विज बनने वाले हैं। पुनरुत्थान पाने के लिए हम इस विश्व में हैं। ईसा मसीह के जीवन का सन्देश यही है कि हमने पुनर्उत्थान पाना है। तो ये जो विचार आपमें भरे जा रहे हैं इनसे सावधान रहें। वर्ष 1970 से मैं इन कुगुरुओं के नाम बता रही हूँ, इन सभी के विषय मे बता रही हूँ। मैंने ये भी बताया कि ये लोग कौन हैं। उनमें से कुछ राक्षस हैं, कुछ शैतान हैं और कुछ को पर-पीड़न में आनन्द मिलता है। परमात्मा से उन्हें कुछ नहीं लेना देना। किसी का मूल्य, उसकी भूमिका, उसकी वास्तविकता समझने के पश्चात ही किसी को गुरु रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। किसी की तस्वीरें लिए हुए पागलों की तरह इधर से उधर दौड़ते हुए अन्य लोगों को भी अपने पीछे दौड़ाते व्यक्ति गुरु नहीं हो सकते। सड़कों पर आप लोगो को मन्त्र बोलते हुए या अटपटे कपड़े पहनकर गीत गाते हुए देख सकते हैं। वस्त्र परिवर्तन से अन्तर्परिवर्तन नहीं होता। अन्तर्परिवर्तन के बिना आप अपनी दुर्बलताओं पर काबू नहीं पा सकते। आपकी समस्यओं का समाधान नहीं हो सकेगा। आप कभी नहीं समझ सकते कि आप इस पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए हैं? आपके जीवन का क्या उद्देश्य है? यहां आप किस लिए आए? आप क्योंकि साधक हैं तो जिज्ञासा के कारण कई बार मुर्खताओं में फंस सकते हैं। कई बार मुझे चिन्ता होती है क्योंकि मास्को के लोगों के लिए, विशेषकर, यह खतरा है क्योंकि वे बहुत सीध हैं। वे अत्यन्त बुद्धिमान है फिर भी सम्मोहित करने वाले लोग उन्हें छल सकते हैं। उदाहरण के रूप में भारत में एक व्यक्ति लोगों को सम्मोहित करके उन्हें सोना, हीरे आदि देता था। कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति उससे मिलने के लिए गए और वहां चार कैमरे लगा दिए गए। हैरानी की बात है कि उसने इन हस्तियों को सम्मोहित कर दिया परन्तु कैमरों को वो सम्मोहित न कर पाया। तस्वीरों से पता चला कि किस प्रकार वह यह चालाकियां कर रहा है। अब सब लोग उसके विषय में जानते हैं। तो इस प्रकार की मूर्खता से आपको सावधान रहना होगा क्योंकि अब आपके अन्दर सभी शक्तियां सभी गुण विद्यमान हैं। मुख्यत: हमने समझना है कि नष्ट होने के लिए हमारा सृजन नहीं किया गया। आप मानव हैं, विकास स्तम्भ। कई बार लोग सोचते हैं कि पशु मानव से बेहतर है। इसका अर्थ यह हुआ कि मानव पशु से कहीं अधिक विकसित है। आपके अन्तर्निहित ये शक्ति जब अंकुरित होती है तो, आप आश्चर्य चकित होगें, किस प्रकार आपकी पूर्ण जीवन शैली को यह परिवर्तित कर देती है।

आपके स्वास्थ्य एवम् मानसिक स्थिति के सुधार के अतिरिक्त यह आनन्दमयी अवस्था है। जिसमें आप पूर्णत: चेतन होते हैं, किसी भी प्रकार से सम्मोहित नहीं होते। आप केवल चेतन ही नहीं होते अपनी शक्तियों का भी पूर्ण ज्ञान आपको होता है। जिस शक्ति के विषय में आपने जाना है आपसे पूर्व भी बहुत से लोगों को इसका ज्ञान था। परन्तु इस प्रकार से सामूहिक आत्मसाक्षात्कार कभी नहीं हुआ। यह विशेष समय है, मैं इसे बसन्त का समय कहती हूँ अब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा। इसमें कोई धर्मांचार नहीं है। मैं नहीं कहती कि ऐसा करो, ऐसा न करो। ऐसा कुछ नहीं कहती। कोई कर्मकाण्ड नहीं है। आपके अन्दर यह पूर्णत: वैज्ञानिक शक्ति है। इस शक्ति को धड़कते हुए कभी-कभी तो आप अपने लौकिक चक्षुओं से भी देख सकते हैं। इसे आप सत्यापित कर सकते हैं क्योंकि आप के सिर के तालू भाग से यह बाहर आती है और अपने सहस्रार पर आप शीतल लहरियों का अनुभव कर सकते हैं। अपनी अगुलियों के सिरों पर भी आप इसे महसूस कर सकते हैं। एक बार जब आप इसका उपयोग करने लगते हैं, तो आप हैरान होंगे, आपको दूसरों के चक्रों का भी ज्ञान हो जाता है क्योंकि हमारी चेतना का एक नया आयाम विकसित हो गया है। आप व्यक्ति के विषय में जान सकते हैं क्योंकि सामूहिक चेतना का नया आयाम आपको मिल गया है। सर्वोपरि आप महसूस करने लगते हैं कि आप एक ही विराट के अंग प्रत्यंग हैं। यह केवल मानसिक या भावनात्मक विचार ही नहीं। वास्तव में लघु ब्रह्माण्ड त्रिभुवन में परिवर्तित हो जाता है।

विश्व भर में 55 देश सहजयोग कर रहे हैं। रूस में तलीयाती नामक स्थान पर 22 हजार सहजयोगी हैं। वे केवल आत्मसाक्षात्कारी ही नहीं हैं परन्तु इस शक्ति को जानते हैं। यह सब अनुभवगम्य (यथार्थ) है। इसे वैज्ञानिक एवम् चिकित्सकीय ढंग से वर्णन किया जा सकता है। यह पराविज्ञान है। परन्तु यह अत्यन्त सहज है क्योंकि हमारे अन्तर्निहित मूल-तत्वों के विषय में यह बताती है। मुझे आपको इतना ही बताना है कि यह घटना बिना किसी परेशानी के घटित होती है। विशेषत: रूस के लोगों के लिए, मेरे विचार से यह बड़े सम्मान की बात है, क्योंकि वे अति विकसित लोग हैं। पश्चिमी देशों के लोग इस अर्थ में विवेकशील नहीं हैं।

अमेरिका में जब मैं बोस्टन गई तो वहां के दूरदर्शन वालों ने मुझसे पूछा कि आपके पास कितनी रोल्स-रॉयस कारें हैं? इतनी बेवकूफी भरी बातें उन्होंने मुझसे पूछीं कि मैं परेशान हो गई। मैंने पूछा," ये क्या रोल्स-रॉयस कारें खोज रहे हैं या अपनी आत्मा?" मूर्ख लोगों को समझाना कठिन कार्य है। यही कारण है कि मेरा हृदय रूस में और यूक्रेन में है। रूस और यूक्रेन में आना और यहां के विवेकशील लोगों से मिलना अत्यन्त आनन्ददायी होता है। ये लोग इतने प्रेममय हैं। आपने अभी तक भी उन मूल्यों को अपनाया हुआ है। परमात्मा का धन्यवाद है कि यहां पर ऐसे लोग हैं जो अपने गौरव को

समझते हैं। ये गुण आपको सुस्वस्थ्य कार्य एवम् वैभव का वचन देते हैं। किस प्रकार? अब मैं आपको बताऊँगी कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात आपके हाथों से चैतन्य लहरियां बहने लगती है। अपने हाथों से बहने वाली चैतन्य लहरियों को यदि उपयोग करे और जल को चैतन्यित करके खेती में दें, तो आप हैरान होंगे, आपकी खेती दस गुनी फसल देगी। भारतीय गाय आस्ट्रेलिया की पागल गायों के बराबर दूध देने लगती है। मानव सृजित अभिजाति (Highbreed) होने के कारण आस्ट्रेलिया की गाय पागल होती है और मैं सोचती हूँ कि इनका दूध पीने वाले भी पागल बन जाते हैं । ये उपयोगात्मक तथ्य है और अब हमारे पास इसके प्रमाण हैं।

दूसरे आपको जो बच्चे प्राप्त होते हैं वे भी आत्मसाक्षात्कारी एवम् प्रतिभावान, विवेकशील एवम् आज्ञाकारी होते हैं। आपके पारिवारिक सम्बन्ध सुधर जाते हैं। पति-पत्नियों के सम्बन्ध सुधर जाते हैं। सहजयोग में हर वर्ष 100 से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय विवाह होते हैं। परन्तु तलाक का अनुपात केवल एक प्रतिशत है। सहजयोगी अत्यन्त कोमल, करुण एवम् भद्र हो जाते हैं और एक-दूसरे की संगति का आनन्द लेते हैं। शराब, नशा आदि दुर्व्यसन छूट जाने से आपको पैसे की बहुत बचत होती है। सरकार जो धन माफिया संचालित लोगों की देखभाल में खर्चती है वो भी बच जाता है, क्योंकि सहजयोग में आने के पश्चात यह स्वत: ठीक हो जाता है। माफिया के लोग भी विनम्र हो जाते हैं। यह ऐसी शक्ति है, करुणा एवम् प्रेम की शक्ति, क्योंकि लोग अच्छे नागरिक बन जाते हैं इसलिए राष्ट्रीय धन की भी बहुत बचत होती है। राजनीतिज्ञ भी भले बन जाते है। वे न केवल बुद्धिमान हो जाते हैं परन्तु स्वार्थपरता को भी त्याग देते हैं। सर्वत्र परमात्मा का साम्राज्य दिखाई पड़ता है। तर्क एवम् रूढिवाद के अभाव के कारण साम्यवाद में भी कुछ अच्छाइयां थीं। प्रजातन्त्र का एक बहुत अच्छा गुण स्वतन्त्रता है। ये तीनों चीजें आपके साथ घटित हो जाती हैं। अपनी जाति एवम् धर्मान्धता से ऊपर उठकर आप एक स्वतन्त्र पक्षी बन जाते हैं, पूर्णत: स्वतन्त्र पक्षी। अपनी स्वतन्त्रता का अपनी भलाई के लिए उपयोग करते हैं विनाश के लिए नहीं। प्राय: स्वतन्त्रता का उपयोग विनाश के लिए किया जाता है। पश्चिमी देशों में यही हो रहा है। अन्धकार एवम् अज्ञानता के कारण सारी समस्याएं खड़ी हुई हैं। आत्मा के प्रकाश में जब हम आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं तो आप जान जाते है कि आप क्या कर रहे हैं और आपके हित में क्या है। सभी भय धुल जाते है। असुरक्षा की भावना चली जाती है और आप अत्यन्त प्रगल्भ बन जाते हैं। साथ ही साथ आप अत्यन्त करुणामय एवम् क्षमाशील भी हो जाते हैं। यह सब घटित हो रहा है और इस प्रकार यह घटित होगा कि ये विश्व परमात्मा के प्रेम का अत्यन्त सुन्दर उद्यान बन जाएगा। मुझपर विश्वास करें कि कुछ भी नष्ट नहीं होगा और न ही आपको कोई हानि पहुँचेगी। मुझे विश्वास है कि अगले वर्ष मैं फिर यहां आऊँगी और यहां पर अब से भी अधिक लोग होंगे जिन्हें आपने आत्मसाक्षात्कार देना होगा।❑❑

परमात्मा आपको आशिर्वादित करें।

रूस संकीर्ण द्वार है

हमारे पृथ्वी ग्रह पर स्थित हर देश कोई न कोई चक्र है या इसका कोई भाग। उदाहरणार्थ आस्ट्रेलिया मूलाधार है, अफ्रीका स्वाधिष्ठान, आस्ट्रेलिया नाभि, इंग्लैण्ड विशुद्धि, रूस दाईं आज्ञा, चीन बाईं आज्ञा और नेपाल सहस्रार है। हर देश के अन्दर भी चक्र विद्यमान है जैसे रूस में तलियाती, मूलाधार है, सैंक्ट (Sankt) पीटर्सबर्ग हृदय है और मास्को अगन्य चक्र है।

तलियाती में वोल्गा मतुस्का (Volga Matuska) (वोल्गा माँ) अपने तदनुरूपी देवता अर्थात श्री गणेश का रूप धारण करती है। यह क्षेत्र, जहां की ध्यान धारणा करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है, दूसरा मक्का बन जाएगा जहां पूरे पृथ्वी ग्रह से सहजयोगी तीर्थ-यात्री यात्रा करने के लिए आया करेंगे।

तलियाती तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में सहजयोग रूस के हृदय सैंट पीटर्सबर्ग से आया। आज्ञा चक्र को शुद्ध करने के लिए पहली पूजा, जिस की आज्ञा श्रीमती जी ने दी थी, सैंक्ट पीटर्सबर्ग में हुई। यह शहर इत्तफाक से नहीं चुना गया था। अहंकार का नाश में करके मस्तिष्क की सीमाओं को पार करना हृदय के प्रेम से ही संभव है। रूस के महान साक्षात्कारी लेखक लियो टालस्टाय कहा करते थे, " जीवन को विवेकमय बनाने के लिए आवश्यक है कि मानव मस्तिष्क की सीमाओं से ऊपर उठना ही जीवन का लक्ष्य होना चहिए।"

अहंकार को नाश में करने के लिए इस शाश्वत संकीर्णद्वार को खोलने के लिए ईसामसीह ने स्वयं को सूली पर चढ़वा लिया। आज मास्को अहम् बिन्दु है, तो पृथ्वी और अपने देश के अगन्य चक्र पर रहने वाले मास्को के लोगों की कितनी बड़ी जिम्मेदारी है! यहां सभी उपक्रम बहुत लम्बा समय लेते हैं। परन्तु मास्को के सहजयोगियों को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय दीपावली पूजा और पिछले नवम्बर विवाहोत्सव का अवसर प्राप्त होना यह दर्शाता है कि उन्होंने कुछ उन्नति की है।

अब सहस्रार का उपयोग करते हुए आदि कुण्डालिनी पृथ्वी ग्रह के भिन्न चक्रों का एकीकरण कर रही है और सहजयोग इसका यन्त्र है। आशा की जाती है कि यह सहजयोग हृदय, मस्तिष्क भावना-कार्यान्वयन, आध्यात्मिकता और भौतिकता में संघटन लाएगा। अगन्य ग्रह में रहने वाले रूसी सहजयोगी, क्योंकि भूगोलिक रूप से पूर्व एवम् पश्चिम के मध्य में सेतु हैं, आदिशक्ति के इस दिव्य कार्य में वाछित भूमिका निभाएंगे। अत: उन्हें चाहिए कि वे अपनी पथप्रदर्शक (Councellor) आदि शक्ति (Holy Ghost) से जिनके आगमन के लिए, ईसामसीह ने यह संकीर्णद्वार खोला था, निरन्तर एवम् दृढ़ सम्बन्ध (योग) बनाए रखें। ❑❑

जय श्री माता जी।

चिकित्सा सम्मेलन

मास्को

07-08-1993

देर से आने का मुझे खेद है। रास्ता भटक जाने के कारण हम ये स्थान न खोज पाए। विज्ञान के इस नए आयाम (New Dimension In Science) के विषय में सुनने की इच्छा से आप सब लोगों को यहां बने रहने के लिए मैं धन्यवाद देती हूँ। सहजयोग को मैं पराविज्ञान (Meta Science) कहती हूँ क्योंकि सहजयोग में विज्ञान की विधियां नहीं उपयोग की जातीं। उदाहरण के रूप में चिकित्सा विज्ञान में जब हम कोई शोध करना चाहते हैं तो हम एक प्रकार की कल्पना, या मैं कहूँगी परिकल्पना का आश्रय लेते हैं और सोचते हैं कि किसी रोग या समस्या विशेष का संभवत: यही समाधान होगा। दूसरी ओर हर दिशा में सूक्ष्मदर्शी संरचनाओं एवम् वण्टमूष (Guinea Pig) के विषय में जानने के लिए शोध हो रहे है। ये सभी नए विज्ञान विकसित हो चुके हैं। ये इतने भिन्न एवम् विशिष्ट हैं कि इन पर शोध करने के लिए व्यक्ति को कम से कम 15 वर्ष तक अध्ययन करना होगा। तब भी हमें पूर्ण सूचना न मिलेगी कि विश्व में कब और कहां क्या घटित हो रहा है। मान लो आप कहते हैं कि, " मैंने कुछ नया खोज निकाला है", संभवत: अन्य लोग आपको सूचित करें कि आस्ट्रेलिया में वे पहले से ही यह सब खोज चुके हैं। इस प्रकार आप का सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा और आपको मान्यता तो आपके आविष्कारों द्वारा ही प्राप्त होती है।

इन अविष्कारों का प्रयोग भी एक अन्य शोध है। पहले आप चूहों पर प्रयोग करते हैं फिर बंदर पर फिर सुअरों पर और तब मानव पर । जब आप इसका प्रयोग करते हैं तो आपको पता चलता है कि यह घातक है। यह शोध कभी-कभी बहुत भयानक होते हैं। कुछ औषधियों का असर कुछ लोगों पर विष सा होता है क्योंकि हर व्यक्ति भिन्न प्रकार से बनाया गया है और उसकी भिन्न समस्याएं होती हैं। अत: अपने तत्व को जाने बिना, अपने अन्तस को जाने बिना, इन रोगों के कारणों को जाने बिना, इनके विषय में हम ठीक से कुछ भी न कर सकेंगे। अंग्रेजी दवाइयां, विशेषतौर पर, बहुत ज्यादा गर्मी पैदा करने वाली होती है। इस गर्मी को सन्तुलित करने के लिए आपको कुछ न कुछ लेना होता है। यह एक अन्य अन्ध गली (Blind Alley) है।

सहजयोग परा-विज्ञान है। यहां आपको शोध नहीं करना पड़ता । इस पर पहले से शोध हो चुका है और सभी कुछ विद्यमान है। वर्षों तक परिश्रम करके बन्दरों, चूहों और सूअरों पर शोध एवम् अध्ययन आप को नहीं करना पड़ता। रोग निदान के भयानक नर्क में रोगियों को डालने की भी आपको आवश्यकता नहीं। सारा शोध कार्य हो चुका है। सभी कुछ खोजा जा चुका है और लोग जानते हैं कि यह क्या है। इसमें कोई विशेषज्ञता भी नहीं है। उदाहरणार्थ आजकल एक आंख के लिए एक विशेषज्ञ है और दूसरी के लिए दूसरा। कभी-कभी पूरा खीसा खाली कर लेने के बाद आपको प्रमाणपत्र प्राप्त होता है कि आप सबसे अधिक सुस्वस्थ्य व्यक्ति हैं। हो सकता है इस रोग निदान के कार्य में आपके सभी अंग, दांत, आंखे, नाक, कान या अन्य कुछ निकाल लें। चिकित्सा विज्ञान में इस प्रकार की अज्ञानता ने मुझे चिकित्सा विज्ञान की ओर भी आकर्षित किया। मैंने सोचा कि डाक्टरों से बात करने के लिए मुझे प्रौद्योगिकी (Techonology), कार्यपद्धति एवं समस्याओं का ज्ञान होना आवश्यक है।

अब हमें महसूस करना है कि ये विश्व रोगों से भरा हुआ है। यहां पर ऐसे बहुत से लोग हैं जो अंग्रेजी इलाज करवाने में अक्षम हैं। पश्चिम मे बहुत से डाक्टर सहजयोग इसलिए नहीं अपनाना चाहते कि कहीं उनकी कमाई कम न हो जाए। क्योंकि यदि बिना औषधियों के रोगी ठीक होगा तो उनकी जीविका चली जाएगी। नि:संदेह इस मामले पर मुझे हमदर्दी है परन्तु मैं सोचती हूँ कि चिकित्सा एक श्रेष्ठ पेशा है और प्राय: श्रेष्ठ लोगों को ही यह पेशा अपनाना चाहिए। बाद में धन के आकर्षण से वे भटक जाते हैं और इसे व्यापार बना लेते हैं। परन्तु उन देशों में जहाँ लोग धनाभाव के कारण चिकित्सा सहायता नहीं प्राप्त कर सकते वहां मैं आपकी श्रेष्ठता, महानता और मानवीय स्वास्थ्य को चुनौती दूँगी। रूस और यूक्रेन के लोगों को मैं अत्यन्त मानवीय पाती हूँ। चीन के लोग भी अत्यन्त मानववादी हैं। इन लोगों को मैं बताना चाहूँगी कि एक वैज्ञानिक के खुले मस्तिष्क से आप समझें कि सहजयोग क्या है? एक परिकल्पना के रूप में आप इसे लें। समस्याओं से उभरते हुए आप जैसे देश के लिए भारत, पूर्वी खण्ड (East Block) मिश्र तथा सोमालिया जैसे अफ्रीकन देशों के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। इन सभी स्थानों पर मानव के साथ दुर्व्यहार हो रहा है। यह अत्याचार है। धन लोलुप लोगों द्वारा की गई तोड़-मरोड़।

अतः मैं इसे (सहजयोग) पराविज्ञान कहती हूँ क्योंकि सहजयोग का पूर्ण ज्ञान आपके सम्मुख है। हम दावा भी कर सकते हैं कि बहुत से मनोदैहिक, शारीरिक, मानसिक रोग सहजयोग द्वारा ठीक किए जा सकते है। खेद के साथ मुझे कहना पड़ता है कि पिछले चार वर्षों से मैं यहां चिकित्सकों को सम्बोधित कर रही हूँ फिर भी कोई ठोस कार्य नहीं हुआ। यह बड़ी हैरानी की बात है। स्वभाव से इतने सामूहिक आप लोगों को समझना चाहिए कि चिकित्सक होने के नाते आप अपने साथी मनुष्यों के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि सभी धनी लोग आप के लिए धन खर्चने को तैयार हैं। परन्तु असाध्य रोगों के कारण मरने वाले लोगों के लिए आप यदि कुछ कर सकते हैं तो क्या आप सोचते हैं कि यह डॉक्टर का कर्तव्य नहीं है? इसके विपरीत भारत में मेरा भाषण सुनने के लिए दो सौ डॉक्टर थे, क्योंकि सभागार बहुत बड़ा न था। इसके पश्चात उन्होंने इसे अपनाया और अब ये लोग सीख रहे हैं कि सहजयोग क्या है। वे इसे कार्यान्वित कर रहे हैं क्योंकि भारत भी अत्यन्त गरीब देश है। परन्तु यदि आपमें अपने साथी मनुष्यों के लिए करुणा एवम् प्रेम की भावना नहीं है तो यह कार्यान्वित न होगा।

एक डाक्टर राय हैं जिनकी पोती सहजयोग से ठीक हुई, जबकि उन्हें कहा जा रहा था कि इस बच्चे की मृत्यु हो जाएगी। उसने सोचा कि मेरी पोती की तरह से और भी तो नन्हें बच्चे होंगे जो अंग्रेजी चिकित्सा से ठीक नहीं हो सकते। वे बहुत पढ़े लिखे है। परमात्मा ही जानता है कि उनके पास कितनी डिग्रियां हैं, कंगारू की लम्बी पूँछ की तरह से। परन्तु जब वे अपनी पोती का इलाज न कर पाए तो उनकी सभी उपाधियां धरी रह गई और वे सहजयोग में आ गए। अभी तक भी उनमें बहुत अहंकार था और वे विश्वास न कर पा रहे थे कि ये बच्चा ठीक हो सकता है। उन्होंने मुझसे कहा, "विज्ञान की दृष्टि से पहले आप मुझे बताएं कि आप क्या करने वाली हैं।" मैंने कहा, "डाक्टर आपके पास पहले ही विज्ञान की बहुत सी उपाधियां हैं। आप चाहते हैं कि आपकी पोती जीवित रहे या आप विज्ञान का ज्ञान चाहते हैं?" मैंने कहा, "मैं उस बच्चे को कुछ नहीं करना चाहती, तुम्हें विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि बच्चा ठीक हो सकता है। मै बच्चे की कुण्डलिनी जागृत करूँगी और बच्चा ठीक हो जाएगा। इसके लिए आपको कुछ भी न देना होगा।" तब भी वह विश्वास न कर पाया। परन्तु बच्चे की माँ ने कहा, " बाबा मै अपने बच्चे का जीवन चाहती हूँ।" और वह बच्चा ठीक हो गया। तब मैंने उसे बताया: "अब बैठ जाओ, मै आपको बताऊंगी कि बच्चे के साथ क्या समस्या थी और किस प्रकार वह ठीक हो गया। अब मै आपको बताती हूँ।" जब मैंने उसे बताया तो वह हैरान रह गया। कहने लगा कि यह तो हमारे चिकित्साविज्ञान में भी नहीं है।" मैंने कहा आप यहां तक नहीं पहुँच सकते क्योंकि विज्ञान की भी अपनी सीमाएं हैं। परन्तु अब जो मैं कह रही हूँ आप उसे सत्यापित करें। और यदि यह सत्य हो तो इसे अवश्य स्वीकार करें।" वह इतना आश्चर्यचकित हुआ।

तीन दिनों की अवधि में उसका बच्चा दौड़ता फिर रहा था। अब वह बच्ची बड़ी हो गई है, उसका विवाह हो गया है और उसके बच्चे हैं। तो मेरे मस्तिष्क में आया कि, "क्यों न हम सहजयोग पर शोध करें?" मैंने उसे तीन चार असाध्य रोगी शोध के लिए लेने को कहा और बताया कि किस प्रकार उनका इलाज किया जाए। तत्पश्चात तीन डाक्टरों ने सहजयोग पर शोध करके एम. डी. की उपाधियां प्राप्त कीं। एक ने मिर्गी रोग पर, दूसरे ने अस्थमा पर और तीसरे ने शारीरिक तन्दरुस्ती पर, जैसे उच्च रक्तचाप को, हृदय की धड़कनों को और पूरे शरीर को सामान्य करना। इन सारी बीमारियों का सौ रोगियों पर शोध किया गया और तब वे जान पाए कि किस प्रकार सहजयोग द्वारा रोगी ठीक हो सकते हैं। तब मैंने डा. राय को एक पुस्तक लिखने के लिए कहा और उन्होंने एक बहुत अच्छी पुस्तक लिखी। जिसका विमोचन बहुत से डाक्टरों के सम्मुख किया गया। अब वह पुस्तक तैयार है। हम सोच रहे हैं कि रूसी भाषा में भी इसका अनुवाद करवाएं। परन्तु इस पुस्तक को भी पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं जो भी कह रही हूँ उसे जानने के लिए आप सब शोध कर सकते हैं। यदि यह बहुत ही सहज इलाज है तो इसे स्वीकार कर लें और विश्वास करके इसे अपना लें। चिकित्सा विज्ञान में भी यदि बताया जाए कि, "इस बीमारी के लिए अमुक औषधि है" तो हमे इस पर विश्वास करना पड़ता है। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि ऐसी कोई समिति नहीं है जो ये कहे कि,"यह निश्चित रूप से ठीक है।" कोई भी प्रयोग करके यह नहीं कह सकता कि यह सर्वोत्तम है।" परन्तु हम विश्वास करते हैं कि ठीक है ये चीज बाजार मे आई है और इसे बनाने वाले लोग अच्छे हैं इसलिए हम इसे अपना लेते हैं। इसी तरह औषधि व्यापार बहुत बड़ा उद्यम बन गया है। इसे बेचने वाले लोग भी इस पर विश्वास करते हैं और इसे अपनाते हैं। मैं किसी चीज को बेचना नहीं चाह रही और न ही आपसे किसी चीज की आशा है। परन्तु मैं चिकित्सा पेशे की श्रेष्ठता को जागृत करना चाहूँगी क्योंकि इसमें हमें अपने साथी मनुष्यों की सेवा करनी होती है जो कि सदैव पैसे के लिए नहीं होती। करुणा के लिए भी होती है। मेरे पास बहुत से ऐसे लोग आते हैं जिन्हें सहजयोगी ठीक कर सकते हैं। मैं एक श्रेष्ठ व्यक्ति डा. बागडान का उदाहरण दूँगी। उन्होंने लन्दन में खुल्लमखुल्ला सहजयोग से इलाज शुरु किया और अंग्रेज डाक्टर सोचते हैं

कि वे हर क्षेत्र में चोटी पर हैं। एक बहुत बड़ी गली हार्लीस्ट्रीट, में एक अस्पताल है जहां व्यक्ति को न जाने कितनी नकद राशि जमा करनी होती है। अरब देशों के सभी लोग वहां आते हैं। वहां पर किसी डाक्टर से समय लेना बहुत कठिन कार्य है। अरब देशों से सारा पैसा हार्ली स्ट्रीट में आ रहा है। कुछ डाक्टर पूरा महीना चिकित्सा कार्य करते हैं, कुछ सप्ताह में एक घन्टा और कुछ 15 मिनट। आप यदि 15 मिनट देर से जाएं तो कोई अन्य डाक्टर बैठा हुआ मिलेगा। यह इतना सुनियोजित है तो चिकित्सा विज्ञान व्यापार बन गया है। यही कारण है कि सस्ते और सुगम तरीके से अपने साथी मानवों का इलाज करने का तरीका लोग नहीं निकालना चाहते।

आपके शरीर तन्त्र की तस्वीर यहां है । यह आपके अन्त:स्थित मूल यन्त्र है। इस पर तीन नाड़िया और सात चक्र हैं अत: तीन गुणा सात अर्थात मूलत: इक्कीस प्रकार की समस्याएं हो सकती हैं। ये मिली जुली भी हो सकती है। निदान आपकी अंगुलियों के सिरो पर है। कुरान में मोहम्मद साहब ने कहा है कि आपके हाथ बोलेंगे और सत्य और सत्य के विषय में शहादत देंगे परन्तु अरब के लोग सहजयोग में नहीं आएंगे। वे हार्लीस्ट्रीट अस्पताल में जाएंगे क्योंकि पैसा देकर खरीदी हुई चिकित्सा उन्हें बेहतर लगती है। यह मनोवैज्ञानिक है। परन्तु मैं सोचती हूँ कि रूस के लोग अधिक बुद्धिमान है।

तो मूलत: हमारे अन्दर 21 प्रकार की समस्याएं हैं और इनके छोटे-छोटे रूप पूरक-सम्पूरक (Permutations & Combinations) हैं। मूल प्रकार से तीन प्रकृतियों के लोग हैं। समस्याएं बाएं, दाएं, या मध्य से आती हैं। किसी सहजयोगी से यदि आप समस्या के विषय में पूछें तो वह कहेगा: "बाई ओर की या दाई ओर की।" बस अब केवल एक चीज रह जाती है कि बाई या दाई ओर का पोषण करें।

उदाहरण के रूप में यदि गुर्दा खराब हो जाए तो रोगी को डाइलिसिस के लिए ले जाते हैं। सभी जानते हैं कि रोगी को बचाया नहीं जा सकता। पूरा जीवन ही वह डाइलिसिस पर रहेगा। दुर्भाग्यवश डाइलिसिस विभाग के एक प्रसिद्ध विभागाध्यक्ष का गुर्दा खराब हो गया। कहने लगा: "मै डाइलिसिस पर नहीं जाना चाहता क्योंकि पूरा जीवन मैं इसका खर्च नहीं उठा सकता।" दिवालिए होकर डाइनिसिस के रोगी मर जाते हैं। धनाभाव में उनकी इच्छा शक्ति भी बेकार हो जाती है। मैने उस डाक्टर को कहा: "मै तुम्हें बताती हूँ कि सहजयोग से गुर्दा रोग शत प्रतिशत ठीक हो जाएगा। परन्तु आप मुझसे वायदा करें कि लोगो को ठीक करने के लिए आप डाइलिसिस का पुन: उपयोग नहीं करेंगे। केवल सहजयोग से आप लोगों को ठीक करेंगे। उसने मुझे वचन दिया । वह ठीक भी हो गया। परन्तु अब भी वह डाइलिसिस उपयोग किए जा रहा है। मैने कहा अब आप डाइलिसिस क्यों उपयोग करे जा रहे हैं? वह कहने लगा इन मशीनों को खरीदने में हमने बहुत सा धन खर्च किया है। इनसे यदि धनार्जन नही करेंगे तो हमारा क्या होगा? हम दिवालिया हो जाएंगे। मैंने कहा, "तुम बहुत से लोगों को दिवालिया बना चुके हो।" परन्तु उसने यह कार्य न छोड़ा। तो यह मानसिकता है। गुर्दा रोगी यदि डाइलिसिस पर न गया हो तो उसे ठीक करना आसान है। डाइलिसिस पर जाने के पश्चात बहुत से रोगियों को हमने ठीक होते देखा है। मनोवैज्ञानिक भय के कारण भी कुछ लोग डाइलिसिस नहीं छोड़ते। उन्हें स्वयं पर विश्वास नहीं है। परन्तु कोई डाक्टर यदि उन्हें बता दे कि तुम ठीक हो गए हो, तुम्हें कुछ नहीं हो सकता तो वे सहजयोग को छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे, कभी डाइलिसिस के लिए नहीं जाएंगे।

मै तुम्हें एक अन्य उदाहरण देती हूँ। भारत के एक बहुत अमीर व्यक्ति हैं। मैं स्वयं इलाज नहीं करती। परन्तु उसके पिताजी मेरे भाई सम थे इसलिए मैं सहमत हो गई: "ठीक है, मैं तुम्हारा इलाज करूंगी।" उन्हें बहुत तीव्र हृदयघात हुआ था। सभी डाक्टरों ने उसे बताया कि तुममें यह कमी है, वह कमी है। तुम्हें हस्टन जाना होगा। वहां दो डाक्टर हैं। एक डाक्टर हृदय निकालता है दूसरा, डाक्टर कूल्हे, हृदय निकालने में तो बहुत कुशल नहीं है परन्तु वह सोचता है कि वह भी इलाज कर सकता है। उस व्यक्ति को डा. कूल्हे के पास जाने के लिए कहा गया। अब वह मेरे पास आया, मैंने उसे बताया: " अब आप बिल्कुल ठीक हैं, पूर्णत: ठीक।" वह विश्वास न कर पाया और जिस डाक्टर ने उसे डा. कूल्हे के पास जाने के लिए कहा था वह उसके पास गया। उसके डाक्टर ने कहा: "अब आप बिल्कुल ठीक है। आपने क्या किया है? आपका हृदय पूर्णतया सामान्य है।" वह कहने लगा, "ऐसा कैसे हो सकता है, मैने दस दिन पूर्व तुम्हारा परिक्षण किया था और तुम बीमार थे ! अब तुम बिल्कुल ठीक हो" संकोच के कारण उसने मेरा नाम नहीं बताया, इतना वैभवशाली व्यक्ति किस प्रकार कहता कि वह सहजयोग के लिए जाता है। तो वह एक अन्य डाक्टर के पास गया, तीन चार प्रसिद्ध डाक्टरों के पास गया। उन्होंने कहा कि आप पूर्णत: ठीक हैं आपका हृदय बिल्कुल ठीक है। परन्तु उसके पास पैसा था, वह हस्टन गया। रास्ते में मुझे मिलने के लिए वह लन्दन आया। मैंने पूछा: "अब आप बिल्कुल ठीक है, कोई परेशानी नहीं।" कहने लगा, " हां मैं टेनिस खेलता हूँ और बिल्कुल ठीक हूँ, परन्तु डा. कूल्हे को तो मै अवश्य मिलूंगा।" मैंने कहा, "ठीक है तुम्हारे पास पैसा है, अवश्य जाओ। इस डाक्टर कूल्हे को मैं जानती हूँ।" वह उसके पास गया। उन्होंने उसे सभी प्रकार से जाँचा। उसके सभी प्रकार के परीक्षण किए। जब रिपोर्ट डा. कूल्हे के पास गई तो डा. कूल्हे उसपर बिगड़ गए और कहने लगे, " बेहतर होगा कि पागलखाने जाकर तुम अपना परीक्षण

करवाओ। तुम्हे कोई रोग नहीं है। तुम्हारा हृदय पूर्णत: स्वस्थ्य हैं।" डाक्टर उस पर चिल्लाया, यहां तुम मेरा और हस्पताल का समय बर्बाद करने के लिए आ गए हो। यहां लोग लाइनों में प्रतीक्षा कर रहे हैं और तुम मेरा समय बर्बाद कर रहे हो। कौन से मूर्ख डाक्टर ने तुम्हें हमारे पास भेजा है? कौन से हस्पताल ने? पैसे के लालच में सभी स्वस्थ्य लोगों को भेज देते हैं। अब कभी मुझे अपनी शक्ल मत दिखाना।" उसने आकर मुझसे सारी कहानी सुनाई और हंस हंसकर लोटपोट हो गया। फिर भी कहने लगा, " श्री माताजी व्यक्ति का भाग्य भी अच्छा होना चाहिए; देखिए मै किस प्रकार आपसे मिल सका। परन्तु मेरे चाचा आपसे न मिल पाए। मेरे भाग्य को देखें।" तो यह उस व्यक्ति की कहानी है जिसका हृदय रोग ठीक हो गया।

मेरा कोई हस्पताल नहीं है, कोई सचिव नहीं हैं । मैने उसे कहा कि बाबा तुम सहजयोग केन्द्र जाओ वे तुम्हारा इलाज करेंगे। परन्तु उसके मित्र उसी की तरह से धनवान हैं वे कैसे सहजयोग केन्द्र जैसे साधारण स्थान पर जा सकते हैं। कहते हैं कि ये हमारे सम्मान के अनुरूप नहीं। अत: श्री माताजी आप ही हमारा इलाज करें। उनमें से कुछ लन्दन और स्पेन तक मेरा पीछा करते रहे और मुझे बहुत परेशान किया। परन्तु कभी मुझे मिल न पाए। मैने कहा, " अच्छा होगा कि आप सहजयोग केन्द्र जाएं।" "परन्तु सहजयोगी डाक्टर नहीं हैं हम उनसे इलाज नहीं कराएंगे। इसीलिए मै आप लोगों से अनुरोध कर रही हूँ कि आप श्रेष्ठ लोग हैं। आपकी उपाधियों पर उन्हें श्रद्धा है। वे आपको करुणामय और ईमानदार समझते हैं। यही कारण है कि मैं डाक्टरों से बात कर रही हूँ। अब मुझे आशा है कि रूस में आपमें से कुछ लोग सहजयोग का ज्ञान प्राप्त करेंगे। कोई हस्पताल हमें सहजयोग के लिए कुछ स्थान देने वाला है। परन्तु पिछले चार वर्षों से कुछ भी नहीं हुआ। इससे पूर्व भी मैं आपको सहजयोग के विषय में बताती रही। आज मैने आपको बताया है कि क्यों चिकित्सक लोग सहजयोग के ज्ञान को अपनाएं। क्योंकि मुझे डाक्टरों से बातचीत करनी थी। अपने मस्तिष्क को खोलें। यह पराविज्ञान है, चमत्कार है। आप वास्तविकता के अन्य क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, पूर्णत्व में प्रवेश करते हैं। विश्वास करें, आप मानव का बहुत हित कर सकते है। कल इतिहास में क्या लिखा जाएगा कि रूस के डाक्टरों ने अपने साथी मानवों की चिन्ता नहीं की। उन्होंने सहजयोग लोगों तक नहीं पहुँचाया । एक दिन तो सहजयोग निश्चित रूप से लोगो तक पहुँच जाएगा। आज भी रूस ओर यूक्रेन में हजारों सहजयोगी हैं जो स्वयं इलाज कर सकते हैं। परन्तु डाक्टर न होने के कारण कुछ विशेष नहीं हो पा रहा। आप स्वयं शोध करके देख क्यों नहीं लेते कि जो हम कह रहे हैं वह सत्य है या नहीं। आप डाक्टर लोग यदि आज कोई कदम नहीं उठाते तो कल लोग कहेंगे, " उनमे क्या कमी थी?" जब सारी चीज आप तक स्पष्ट रूप से लाई गई है और वह चिकित्साविज्ञान से भी अधिक प्रभावशाली है तो क्यों न इसे आप अपनाएं? अभी भी मैं डाक्टरों को समझ नहीं सकी। मैं जब चिकित्सा विद्यालय में पढ़ रही थी तो हम छ: लड़कियां थीं। वे सभी बहुत अच्छी थीं और देश के लिए कुछ करने का इरादा था। परन्तु तब तक सामूहिक रूप से सहजयोग का कार्यान्वयन मैं न खोज पाई थी। आज मैं 71 वर्ष की हूँ और वे मुझसे भी बड़ी हैं। वो पीढ़ी हमने खो दी है जिसमें करुणा एवं आशीर्वाद था, जिसके मानवीय मूल्य बहुत ऊँचे थे। परन्तु यदि आपकी कुण्डलिनी जागृत हो जाए, तो मुझे विश्वास है, इन सभी गुणों को अपने में अभिव्यक्त होता हुआ आप पाएंगे। आप अत्यन्त प्रग्लभ एवम् करुणामय बन जाएंगे। मुझे खेद है कि मुझे यह सब बातें आपसे कहनी पड़ीं। परन्तु आप लोग रूस और यूक्रेन के लोगों के लिए मेरी भावनाओं को समझें। वे बहुत अच्छे लोग हैं। अमेरिका के डाक्टरों से मै यहां मौन की आशा नहीं कर सकती। वैसे तो मैं भी सोचती हूँ कि आप लोगों के मुकाबले वे मूढ़ हैं । अन्य लोग अहंकारी हैं । मै बहुत समय से रूस आ रही हूँ और जानती हूँ कि रूस के लोग अत्यन्त बुद्धिमान हैं और उनका हृदय बहुत विशाल है। इसी लिए मैं एक बार फिर आपके विवेक से अनुरोध करती हूँ।❑❑

आपका हार्दिक धन्यवाद

दिवाली पूजा

मास्को

12-11-1993

विश्वभर से इतने सारे लोगों को देवी लक्ष्मी की पूजा करने के लिए यहां आया देखकर बहुत आनन्द हो रहा है। बुद्धि से जब आप सभी चीजों का वर्णन नहीं कर पाते तो अपनी अन्तर्अभिव्यक्ति करने के लिए कला का सहारा लेते हैं। तार्किक रूप से या शब्दों में जिस बात को आप नहीं कह सकते उसे कहने के लिए आप प्रतीकों का सहारा लेते हैं। कलाकार यही करता है, कवि भी यही करता है। वह अपनी कल्पना को इस प्रकार विस्तृत करता है कि उससे प्रतीक का सृजन कर देता है। यह मस्तिष्क सीमित है और एक सीमा तक ही जा सकता है। सत्य और वास्तविकता से यदि इसे प्रमाणित किया जाए तो कुछ समय पश्चात पूर्ण रेखीय गतिशीलता रुक जाती है और पतन हो जाता है। आज सभी क्षेत्रों में हमें यह दिखाइ देता है, सभी उत्कृष्ट चीजों का पतन हो गया है। यह पतन घटित होता है और लोग इसे स्वीकार कर लेते हैं।

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात जब आप आत्मा बन जाते हैं तो अपकी कल्पना वास्तविकता को छू लेती है। तब पथभ्रष्ट एवं मिथ्या प्रतीक छूट जाते हैं और आप प्रतीकों की वास्तविकता को छू लेते हैं। सर्वत्र बिल्कुल यही हुआ है। उदाहरणार्थ भारत में धन की देवी को लक्ष्मी रूप में मानते हैं। लक्ष्मी के इस प्रतीक का वर्णन वास्तविकता में सन्तों और पैगम्बरों ने किया। परन्तु बाद में लोग न तो प्रतीक को समझ पाए और न ही इसके पीछे छिपी वास्तविकता को। उन्होंने सोचा कि लक्ष्मी का प्रतीक धन, वैभव, सोना, चाँदी, हीरे तथा धन धान्य है। उन्होंने धन की पूजा करनी शुरू कर दी और इस प्रकार वैभव की प्रतीक देवी लक्ष्मी को तोड़ मरोड़ कर दर्शाया। लोग नहीं समझते कि धन मिल जाने पर वे दुष्कार्य क्यों करने लगते हैं। भारत में भी आजकल लोग इतने पथभ्रष्ट हो गए हैं कि यदि किसी गरीब व्यक्ति को आप सौ रुपये दें तो वह सीधा शराब के अड्डे पर पहुँच जाएगा। वह अपने सुख लोभ के विषय में सोचेगा, किसी अन्य के विषय में नहीं, अपने परिवार, अपने बच्चों, अपने देश के विषय में नहीं सोचेगा। केवल अपने विषय में ही सोचेगा।

परन्तु देवी लक्ष्मी का प्रतीक बिल्कुल भिन्न है। सर्वप्रथम जिसके पस लक्ष्मी है उसे माँ होना पड़ता हैं उसमें एक माँ का प्रेम होना चहिए जो अपने बच्चों को प्रेम करती है। उसका 'स्त्री' होना आवश्यक है। स्त्री श्रेष्ठता की प्रतीक हैं, माँ पूर्ण शक्तियों का स्रोत हैं उसमे धैर्य, प्रेम एवम् करुणा होते हैं। तो व्यक्ति जब तक करुणा में नहीं होता और अपने धन को दूसरे के हित के लिए उपयोग नहीं करता तब तक धन के होते हुए भी वह प्रसन्न नहीं रह सकता। आज के वैभवशाली देशों की स्थिति क्या है? अपने धन से वे अपना ही विनाश करने के लिए निकल पड़े हैं। क्रोध, वासना और लोभ की अभिव्यक्ति के लिए वे अपने धन का दुरूपयोग कर रहे हैं। स्वयं को उत्कृष्ट दर्शाने के लिए किए गए आडम्बरों पर वे अपना धन बर्बाद कर रहे हैं।

जैसे अमेरिका में मैं एक धनी व्यक्ति से मिली। उसकी कार के करीब जब मै पहुँची तो उसने मुझे बताया कि मेरी कार के हैंडल दूसरी ओर खुलते हैं। मैने पूछा, क्यों? ऐसी चीज का क्या लाभ है, कोई भी आपकी कार में बन्द हो सकता है'। उसने कहा, 'यह मेरा व्यक्तित्व है, मेरी प्रतिभा ने इस अद्वितीय चीज की रचना की है।' मै जब उसके घर पहुँची तो उसने मुझे बताया, 'सावधान रहें, मेरा स्नानागार अति विशेष है।' कहने लगा, 'यदि आप ये बटन दबाएंगी तो आप सीधे तरणताल में जा पड़ेंगी।' तब वह मुझे अपने पलंग के पास ले गया और कहने लगा, 'यह पलंग अति विशेष है, यदि आप यह बटन दबाएंगी तो आपकी टाँगे उपर की ओर हो जाएंगी और यदि दूसरा बटन दबाएंगी तो आपका सिर उपर की ओर हो जाएगा।' मैने कहा, 'सारी रात मैं यह व्यायाम नहीं करना चाहती, मै पृथ्वी पर सो जाऊँगी।'

पूर्वी खंड (Easterm Block) के लोग यह सोचते है कि अमेरिका या यूरोप के वैभवशाली लोग बहुत प्रसन्न हैं, परन्तु वे खुशहाल नहीं हैं क्योंकि उनमें विवेक का अभाव है। व्यर्थ में वे अपना धन बर्बाद किए चले जाते हैं, वे दिवालिए हैं, बेकार हैं। एक दिन तो वे रॉल्स रॉयस गाड़ी में चल रहे होते हैं और दूसरे दिन सड़क पर भीख माँगते नजर आते हैं उनके पास केवल पैसा है, लक्ष्मी नहीं है।

अत: लक्ष्मी के प्रतीक को समझ लेना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। लक्ष्मी आपकी नाभी में निवास करती है और उसके सन्तुष्ट होने पर ही महालक्ष्मी तत्व जागृत होता है, तभी आप आगे देखने लगते हैं। लोगों के पास बहुत पैसा था परन्तु वे ये न जानते थे कि इसका क्या किया जाए। उन्होंने सोचा कि यह पैसा काफी नहीं है, अभी और धनार्जन करना चाहिए। नशे और सभी प्रकार की बुरी आदतों में वे फँस गए।

लक्ष्मी तत्व इस प्रकार है- जैसा मैने कहा लक्ष्मी एक माँ है। उनके दो हाथों में गुलाबी कमल है। कमल जल में जन्म लेता है और अपने अन्दर भंवरे को भी स्थान देता है अर्थात् धनी व्यक्ति या लक्ष्मीपति के पास गुलाबी कमल की तरह से सुन्दर घर तो हो परन्तु इसमें अतिथियों का स्वागत होना चाहिए। भंवरा कमल के पराग पर बैठ जाता है और रात के समय कमल बंद हो कर ठंड से इसकी रक्षा करता हैं ।

अत: धनी व्यक्ति लक्ष्मीपति नहीं होता। उसे लक्ष्मी जी का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता। केवल विवेकशील वैभवशाली व्यक्ति को लक्ष्मी का अशीर्वाद प्राप्त होता है। ऐसे लोग कमल की तरह से मेहमान-नवाज होते हैं। सदैव अतिथियों का स्वागत करने और देखभाल करने के लिए उद्यत रहते हैं। ध नवान व्यक्ति को सदैव व्यक्तिगत रूप से सत्कारशील होना चाहिए।

परन्तु हैरानी की बात है कि तथाकथित वैभवशाली देश पराश्रित हैं। उन्होंने सभी देशों को लूटा, वहां साम्राज्य बनाए। उदाहरणार्थ भारत में अंग्रेज 300 वर्षों तक हमारे अतिथि थे। बिना किसी वीजा (Visa) या वैध देश परिवर्तन के वे यहां आए। परन्तु आज यदि किसी भारतीय को इंग्लैंड जाना हो तो यह असम्भव बात है। कोई यदि वहां चला भी जाए तो भी वे उन्हें अपने स्तर पर नहीं मानते।

अमेरिका में भी ऐसा ही है। परमात्मा का धन्यवाद है कि कोलम्बस भारत नहीं आया, श्री हनुमान जी उसे अमेरिका ले गए अन्यथा सभी भारतीय समाप्त कर दिए जाते और मैं भी यहां न होती। अमेरिका में उन्होंने वहां के सभी मूल निवासियों को समाप्त कर दिया और उनकी भूमि छीन ली और आज उन्हें धनवान माना जा रहा है। उनके किए हुए पाप अवश्य उनके सामने आएँगें । आज कोई अमेरिका आसानी से नहीं जा सकता । मानो ये उनका अपना देश हो ! वे सब तो उस देश के हैं ही नहीं।

स्वयं को उच्च जाति का मानने वाले लोगों को देखें कि वे अपने को उच्च मानते हैं क्योंकि उनके पास अधिक धन है। उन्होंने गैस कक्ष में डालकर बहुत से लोगों की हत्या की, सभी प्रकार के पाप किए। किस प्रकार वे उच्च जाति के हो सकते हैं? मेरी समझ में नहीं आता। क्या यह उच्च होने का चिन्ह है? ईसा मसीह को यदि हम श्रेष्ठ व्यक्तित्व का प्रतीक मानते हैं तो उनके क्या गुण हैं? जहां तक चरित्र का सम्बन्ध है, वे श्रेष्ठतम व्यक्ति थे, महानतम व्यक्तित्व। इतनी क्षमाशीलता और गरिमा! वे लक्ष्मी जी से आशीर्वादित थे, अत्यन्त सन्तुष्ट व्यक्ति थे। धन के लिए वे कोई अनुचित कार्य न कर सकते थे, कोई उन्हें खरीद न सकता था।

अत: सहजयोग में आने के पश्चात यह जानना आवश्यक है कि आप श्री लक्ष्मी से आशीर्वादित हैं। एक हाथ से वे बाँटती रहती हैं, देना उनका स्वभाव है। एक दरवाजा यदि खुला रहेगा तो हवा नहीं आएगी परन्तु दूसरा दरवाजा यदि आप खोल देंगे तो हवा बहने लगेगी। अत: **सन्तोष सहजयोगियों के गुणों में से एक है।** कुछ लोग पैसे के मामले में चमत्कार की आशा करते हैं, आपका दृष्टिकोण ऐसा नहीं होना चाहिए। अब आप आत्मा हैं और आत्मा शारीरिक या मानसिक सुख सुविधाओं की चिन्ता नहीं करती, आत्मा के सुख की चिन्ता करती है। नि:सन्देह आप में से बहुत से लोग आत्मा बन चुके हैं परन्तु आप में से कुछ अभी तक अपनी स्थिति को नहीं पचचान पाए। यह स्थिति आपको पहचाननी है। दूसरे हाथ से लक्ष्मी जी सुरक्षा प्रदान करती हैं, उन सभी को जो उनकी पूजा करते हैं और उनके लिए कार्य करते हैं।

अत: अपने पास कार्य करने वालों की, आश्रितों की सुरक्षा करना वैभवशाली व्यक्तियों का कार्य है। आज आप उस स्थिति तक उन्नत हो गए हैं कि आपके मस्तिष्क में धर्मान्धता नहीं है, फिर भी आप सभी अवतरणों, पीरों पैगम्बरों की पूजा करते हैं। उनमें से अधिकतर के पास धन न था पर उन्हें लक्ष्मी जी का आशीर्वाद प्राप्त था। वे सन्तुष्ट लोग थे। अत: सन्तुष्ट करना लक्ष्मी जी का गुण है।

अर्थशास्त्र का पहला सिद्धांत है कि आवश्यकताएं आमतौर पर पूर्ण नहीं होती। तो पूर्ण होने वाली कौन सी इच्छा है। यह शुद्ध इच्छा है जो कि कुन्डलिनी है जब आप पूर्णत: सन्तुष्ट हो जाते हैं और जान लेते हैं कि धन, सत्ता तथा अन्य बेकार कि चीजों के पीछे मारे-मारे फिरना मूर्खता है तब आपके अन्दर महालक्ष्मी तत्व जागृत होता है। यह महालक्ष्मी तत्व आपको सत्य साधना की ओर ले जाता है। तब आप विशेष श्रेणी के लोग बन जाते हैं, जिन्हें विलियम ब्लैक ने 'परमात्मा के व्यक्ति' (A man of God) कहा है। तब आपमें बचपन, राष्ट्रीयता बाह्य धर्म के बन्धन नहीं रह जाते। आप इनसे उपर उठ जाते हैं, आत्मा बन जाते हैं। इस समय आप अपने अन्दर के लक्ष्मी तत्व को समझते हैं। लक्ष्मी तत्व का अर्थ है दूसरों के लिए हितकार्य करने का आनन्द लेना। सामूहिक चेतना में आप दूसरों के लिए कार्य करना चाहते हैं। आप यदि अब भी केवल अपने लिए, अपनी सुख सुविधाओं के लिए, अपनी जीविका के लिए, अपनी गरिमा के लिए चिन्तित हैं तो आप असन्तुलित हो जाते हैं। लक्ष्मी जी तो कमल पर पूर्णत: सन्तुलित रूप से खड़ी हैं। वे अपना प्रभुत्व नहीं दिखातीं, मात्र कमल पर खड़ी हैं, कभी नहीं दर्शातीं कि वे वैभव हैं या धनधान्य की देवी हैं । अपने आप में वे पूर्णत: सन्तुष्ट हैं। **आप यदि स्वयं से सन्तुष्ट नहीं हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप स्वयं को नहीं जान पाए। सहजयोगी वह व्यक्ति होता है जो अपने से पूर्णत: सन्तुष्ट है क्योंकि उसकी आत्मा पूर्ण ज्ञान का स्रोत है, उसके चित्त को ज्योतिर्मय करने का स्रोत है और उसके आनन्द को स्रोत है। आनन्द, प्रसन्नता या अप्रसन्नता नहीं है क्योंकि ये दोनों तो अहम् पर निर्भर हैं। आनन्द पूर्ण है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात आपको इतना आनन्द आता है कि आप न तो धन की चिन्ता करते हैं और न ही किसी और चीज़ की। धन मिल जाए तो भी ठीक, नहीं मिले तो भी ठीक । आप पूर्णत: निर्लिप्त हो जाते हैं।**

अन्त में मै आपको राजा जनक की कहानी सुनाऊंगी। जनक श्रीराम की पत्नी सीता के पिता थे। संभवत: वे 6000 हजार वर्ष पूर्व हुए। वे राजा थे। राजाओं के वस्त्राभूषण उन्हें धारण करने पड़ते थे। परन्तु उस समय के सभी सन्त उनके चरण स्पर्श किया करते थे। तो एक गुरु के शिष्य ने पूछा, "आप क्यों उनके चरण स्पर्श करते हैं, वे तो राजाओं की तरह

से वस्त्राभूषण पहनते हैं और उसी तरह से रहते है?" गुरु ने उत्तर दिया, " तुम नहीं जानते कि वे कौन हैं, यदि उनकी कृपा दृष्टि तुम पर हो जाए तो वे तुम्हें आत्मसाक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं।" तो शिष्य नचिकेता राजा जनक के पास गए और उनसे कहा, "श्रीमन् मैं आपके पास आत्मसाक्षात्कार लेने के लिए आया हूँ। राजा ने कहा तुम मुझसे मेरी सारी सम्पत्ति, सभी कुछ ले लो परन्तु मैं तुम्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकता क्योंकि अभी तक तुम इतने विकसित नही हुए हो।" नचिकेता निराश हो गए, "श्रीमन् जब तक आप मेरी योग्यता की परीक्षा लेने के लिए तैयार नही हो जाते मैं प्रतीक्षा करूँगा।" राजा जनक ने कहा, "ठीक है चलो नदी में स्नान करेंगे।" जब वे स्नान कर रहे थे तो महल से आकर लोगों ने राजा को बताया, "श्रीमान आपके महल मे आग लग गई है।" परन्तु राजा ध्यान मग्न थे। एक बार फिर से लोग आए, "अब वहां से आपके सारे लोग, सगे सम्बन्धी और परिवार दौड़ रहे हैं।" परन्तु राजा ध्यान मग्न रहे। नचिकेता उनकी ओर देखता रहा। तब उन लोगों ने कहा, "आग इधर की ओर बढ़ रही है और आपके सारे कपड़े जल जाएंगे।" राजा फिर भी ध्यान मग्न रहे। परन्तु नचिकेता अपने कपड़े उठाकर दौड़ पड़ा। तब उसने महसूस किया कि यह व्यक्ति धन, वैभव, परिवार से कितना निर्लिप्त है और मुझे देखो ! मैं अपनी थोड़ी-सी चीज़ों के लिए चिंतित हूं ! उन्हें यह वस्त्राभूषण इसलिए धारण करने पड़ते हैं क्योंकि वे राजा है। अत: नचिकेता ने स्वयं को उनके सम्मुख समर्पित कर दिया और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। उन दिनों आत्मसाक्षात्कार देना और आत्मसाक्षात्कार पाना अत्यन्त कठिन था। परन्तु आज विशेष समय है, बसन्त का समय । लोग इसे अंतिम निर्णय (Last Judgement) कहते हैं। आप इसे पुनर्जन्म का समय कह सकते हैं, या जिस प्रकार कुरान में कहा गया है, कायमा भी कह सकते हैं। कहा गया है कि कब्रों से निकलकर कुछ लोग पुर्नजन्म प्राप्त करेंगे। परन्तु कब्रों में कुछ बचा है? सिवाय कुछ हड्डियों के वहां कुछ नहीं है। नहीं,ये सारे लोग जो मर चुके हैं मानव शरीर धारण करेंगे और इस विशेष समय में आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करेंगे। ऐसा कहना उचित होगा और यह घटित भी हो रहा है।

अपने पूर्व जन्मों के पुण्य कर्मों के कारण अब आपको आत्मसाक्षात्कार मिल गया है परन्तु आपको चाहिए कि इस महान उपलब्धि को समझें और इसका सम्मान करें । आपको यह भी समझना होगा कि अब आप आत्मा हैं। आप विशेष लोग हैं। आप अपने देश, अपनी जाति, अपने समाज और अपने परिवारों की समस्या का समाधान करेंगे : पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान करेंगे। आप ही लोग पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करेंगे। सुन्दर दिव्य लोगों के एक नए विश्व की सृष्टि आप ही लोग करेंगे अत: स्वयं पर विश्वास रखें। विश्वास बहुत तेजी से कार्य करता है क्योंकि यह सच्चा विश्वास है। सहजयोग में आप लोग उन्नत हों। बौने न बने रहें।

पूर्वी खण्ड (Eastern Block) और रूस में तथा इस देश के अन्य क्षेत्रों में सहज सामूहिकता देखकर मैं प्रसन्न हूँ। आज आप लक्ष्मी का आशीर्वाद मांग रहे हैं तो सर्वप्रथम आपको संतोष एवं उदारता मांगनी चाहिए। लक्ष्मी से आशीर्वादित कभी कन्जूस नहीं हो सकता। ऐसा वो हो ही नहीं सकता। कन्जूस प्रवृत्ति किसी रोगी व्यक्ति की होती है जो यहां वहां पैसा बचाने में ही लगा रहता है। विकसित व्यक्ति को तो यह प्रवृत्ति हो ही नहीं सकती।

मुझे प्रसन्नता है कि मै रूस आई। इस स्थिति में हम ऐसे वातावरण की सृष्टि कर सकेंगे जो आपके देश के हित में होगा। भिन्न देशों से आए हुए लोग भी इस वातावरण को अपने देश मे ले जाएंगे। अब आप जानते है कि आपके कर्म शेष नहीं रहे। ये सब समाप्त हो चुके हैं। अब आप सुन्दर नवनिर्मित लोग हैं। बसन्त का समय आज फलों के रूप में आया है। आप स्वंय पर, अपने कष्टों पर, अपनी समस्याओं पर ध्यान दें। निश्चित रूप से चीजें सुधरेंगी। कोई मुझे कह रहा था कि उन्हें घुटनो में दर्द है। मैंने महसूस किया, बहुत बार मुझे घुटनों आदि में दर्द हो जाता है क्योंकि आपसे यह दर्द मैं खींच लिया करती हूँ। पर मैं इसके विषय में कभी नहीं सोचती। कभी इसकी चिन्ता नहीं करती। मुझे सदैव अपना शरीर बिल्कुल ठीक लगता है। मशीन की तरह से यदि यह बिगड़ जाए तो हमें इसका इलाज कर लेना चाहिए । समाप्त। परन्तु आप लोग हर समय सोचते रहते हैं, "यहां दर्द हो रहा है, यह गलत है। मेरे पास धन नहीं है, मुझे यह व्यापार करना है- वह व्यापार करना है।" सब हो गया।

अब हमें पर-चेतना के क्षेत्र में उन्नत होना है। इन श्रेष्ठ एवम् सुन्दर चीजों के बारे में मैं बोलती ही जा सकती हूँ। बहुत से भाषण मैंने दिए हैं। परन्तु भाषण शब्दों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। ये शब्द-जाल है। अत: आप इन से बाहर आइए।

आपको मस्तिष्क से उपर उठना होगा। मेरा यही स्वपन है। बहुत से लोगों ने मेरा यह स्वपन पूरा किया है। मैं सदैव आपकी हूँ। जब भी आप मुझे चाहें, जहां भी आप मुझे चाहें मैं आऊंगी। मेरा प्रेम, मेरी इच्छा से कहीं अधिक है। परन्तु आपको भी स्वयं को तथा अपने आत्मसाक्षात्कार को प्रेम करना होगा। परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

एक अन्य चीज हमें जाननी है कि लक्ष्मी जी का निवास नाभी में है और आप लोग एक ऐसी अवस्था में पहुँच गए हैं जहां वे (लक्ष्मी जी) आपके अन्दर वास्तविकता हैं। अब वे प्रतीक नहीं हैं। तो आज की पूजा के पश्चात आपके अन्दर यह लक्ष्मी तत्व जागृत हो जाना चाहिए और आपके नाभी चक्र में इसका पूर्ण प्रकाश फैल जाना चाहिए।❑❑

परमात्मा आपको धन्य करें।

* * *

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

को

अवैतनिक सदस्यता

13 नवम्बर को, दिवाली से अगले दिन एक अत्यन्त स्मरणीय घटना हुई। श्रीमाता जी को विज्ञान और कला के पीटर अकादमी (PASA) की, अवैतनिक सदस्या की उपाधि भेंट की गई। सदस्यता के अनुसार पासा रूस में कला और विज्ञान कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी संस्था है। अकादमी के गौरवशील सदस्य निम्नलिखित हैं-

लेखक वेंजिली बेलो, वेलेन्टीन रास्पुटीन, संगीतकार जार्जिए स्विरीडोव, कवि रसूल-गेन्जातो, चित्रकार, इलिया ग्लैजूनी जिनके मुख्य हैं: चिकित्सक एफ. जी. यूग्लोव, वी. जी. काजनाचीन: एल. एन. गूमीलजोव और अन्य लोगों की अध्यक्षता में कार्य करने वाले वैज्ञानिक । निर्मला श्रीवास्तव इस अकादमी की अवैतनिक सदस्या चुनी जाने वाली पहली महिला थीं। डिप्लोमा विद्या विशारद यूरिव वोरोनोव, अकादमी के उपाध्यक्ष तथा कृषक अकादमी विश्वविद्यालय के प्राक्टर ने भेंट किया। विद्या विशारद यूरिव वोरोनोव, जिन्हें श्रीमाताजी से वर्ष 1991 में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ था, ने पाया कि सहजयोग मानवमात्र के प्रति प्रेम एवम् उच्च चारित्रिक मापदंड प्रसारित कर रहा है तथा रूसी प्रकृति के बहुत निकट हैं।

यूरिव वोरोनोव का प्रारम्भिक भाषण: प्रिय साथी नागरिको, देशवासियों, अतिथिगण तथा सम्माननीय श्रीमाता जी,

मेरे पदभार के कारण इस व्याख्यान से आपका परिचय कराने की जिम्मेदारी मुझ पर आई है। यह लेखपत्र केवल सहजयोग के निजी जीवन के लिए ही महान महत्व की चीज नहीं परन्तु दो महान देशों, रूस और भारत, के पारस्परिक सम्बन्धों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। अब विज्ञान और कला की पीटर अकादमी के सभापति मंडल द्वारा सर्वसम्मति से अपनाए गए इस दस्तावेज को पढ़ना मेरा कर्तव्य है।

दस्तावेज की विषय-वस्तु :

दर्शनशास्त्र एवम् औषध विज्ञान की डाक्टर श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव, जो कि धर्म, दर्शनशास्त्र एवम् विज्ञान जैसे व्यापक विषयों में भी विशारद हैं, ने भारत एवम् रूस, दोनों राष्ट्रों के हित एवम् मित्रता को बढ़ावा देने के लक्ष्य से महान कार्य करते हुए हमारी मातृ भूमि को आध्यात्मिकता एवम् सच्चरित्र के केन्द्र के रूप में लिया। उन्होंने हमारी मातृभूमि को पूर्व और पश्चिम को समीप लाने, उच्च चारित्रिक आदर्शों के मूल सिद्धांतों, जिसका अध्ययन हमारी मातृ भूमि अपने बहुराष्ट्रीय व्यक्तिगत रूप में रूसी लोगों के पथ प्रदर्शन में किया करती थी, का केन्द्र माना।

श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव, सहजयोग के उच्च चारित्रिक मूल्यों की संस्थापिका, पूर्ण तार्किकता पूर्वक, शारीरिक एवम् मानसिक स्वास्थ्य के जीवन शैली एवम् सच्चरित्र से सम्बन्ध की मनो-दैहीय (Physiological) प्रक्रिया का वर्णन करती हैं।

विज्ञान एवम् कला की पीटर अकादमी का सभापति मंडल महान भारत की प्रतिभावान पुत्री को बताना अपना परम कर्तव्य समझता है कि उन्हें अकादमी की अवैतनिक सदस्यता के रूप में चुन लिया गया है।

सहजयोग मे विवाह

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

विवाह करके आप एक बेहतर व्यक्ति बन जाते हैं, आपका व्यक्तित्व बेहतर हो जाता है। सहजयोग में विवाह क्यों आवश्यक है? विवाह करना पहला सर्वमान्य कार्य है। परन्तु इसका उपयोग यदि आप उसी लक्ष्य से नहीं करते तो यह विकार बन सकता है। निर्लज्जता बन सकती है, जो कि आपके उत्थान के लिए हानिकारक है। अत: व्यक्ति को अपने अन्दर को विवाह की इस इच्छा को समझना चाहिए।

"विवाह आपको धार्मिक एवम् सामान्य बनने का कारण प्रदान करता है। यह सिखाता है कि किस प्रकार अपने तथा अन्य लोगों के पवित्र्य का सम्मान करें।"

"पवित्रता (कौमार्य) विश्वास(श्रद्धा)है । यह आपके विश्वास का दृढ़िकरण है । स्वच्छता, पावनता (Chastity) की सुगन्ध है। अच्छाई, करुणा आदि सभी गुण पवित्रता की देन हैं। पवित्रता विवेक, मानसिक नहीं है, दिमागी रूप से यदि आप पावन हैं तो आप भयानक हो सकते हैं, जैसे कुछ सन्यासी या तपस्वी लोग होते है। पवित्रता अन्तर्जात है। ये आपके अन्तर्रचित कुण्डलिनी है । ये इसलिए कार्य करती है क्योंकि ये मुझे पहचानती है। यह मेरा प्रतिबिम्ब है। अत: पवित्र रहकर अपनी कुण्डलिनी को दृढ़ बनाएं।"

"..... सहजयोग में विवाहित व्यक्ति अन्य सहजयोगियों से और सहजयोग समाज से यदि प्रेम बांटते हैं तभी महान आत्माएं जन्म लेंगी। तो सहजयोग विवाह की पहली परीक्षा यह है कि विवाह करने के पश्चात आपने अन्य लोगों को कितना प्रेम बांटा।"

"..... अब आपका सहजयोग में विवाह हो गया है। अन्य लोगों की तरह से आपका विवाह नहीं हुआ। इसलिए आपको चाहिए कि परस्पर प्रेम करें। एक दूसरे को समय दें। मधुर व्यवहार करें तथा दूसरों के प्रति विचार-वान हों। ध्यान रखें कि आपका एक पति या पत्नी है फिर भी सामूहिकता सर्वप्रथम है।"

"..... एक सामान्य विवाह में पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाता है। कुछ कारणों वश उसे अब भी मुखिया ही रहना है। पुरुष का मुखिया होना गलत नहीं है, यह ठीक है। परन्तु आप हृदय बनें। सिर की अपेक्षा हृदय अधिक महत्वपुर्ण हैं। संभवत: हम महसूस नहीं कर पाते कि हृदय किस प्रकार महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क यदि रुक जाए तो भी हृदय चलता रह सकता है। हृदय के चलते हुए हम जीवित रह सकते हैं, परन्तु हृदय के रुकते ही मस्तिष्क रुक जाता है। अत: एक महिला के रूप में आप हृदय हैं और पुरुष परिवार का मुखिया (Head)। उसे स्वंय को मुखिया समझने दो। यह केवल एक भावना है, केवल एक भावना। मस्तिष्क सदैव सोचता है कि वह निर्णय लेता है परन्तु मस्तिष्क यह भी जानता है कि हृदय के अनुसार चलना है और हृदय सर्वव्यापक है और हर चीज का स्रोत। महिला यदि अपने महत्व को समझ लेगी, अपनी पदवी को समझ लेगी, यदि वह हृदय है तो वह कभी अपने आप को प्रताड़ित नहीं मानेगी।"

".... सहजयोग में प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति आनी ही नही चाहिए....। किस प्रकार आप पर प्रभुत्व जमाया जा सकता है। आप आत्मा हैं। आपके अहम् को तो चोट लग सकती, परन्तु आप तो आत्मा हैं। आप पर किस प्रकार रौब जमाया जा सकता हैं ? क्या आप महसूस करते हैं कि आप आत्मा हैं? अपनी आत्मा को यदि आप महसूस करते हैं तो आप पर प्रभुत्व नहीं जमाया जा सकता। कोई आप पर रौब नहीं जमा सकता। हर समय यदि आप यही सोचते रहेंगे कि आप पर प्रभुत्व जमाया जा रहा है तो आप अत्यन्त भयातुर व्यक्ति बन जाएंगे। तब आपका स्वभाव अत्यन्त भयानक हो जाएगा और लोगों का सामना करने की क्षमता आप में न रहेगी। अत: समय है कि आप महसूस करें कि आप आत्मा हैं और आपके पति भी आत्मा हैं। यदि आप पति हैं तो जान लें कि आपकी पत्नी भी आत्मा है। आप दोनों क्योंकि सन्त हैं, सहजयोगी हैं अत: पारस्परिक सम्मान होना आवश्यक है।"

".... प्रभुत्व किस लिए जमाना है? ये शब्द 'प्रभुत्व' मेरी समझ मे नहीं आता। दो पहिए कभी एक दूसरे पर प्रभुत्व जमाते हैं? क्या वे ऐसा कर सकते है? एक यदि प्रभुत्व जमाता है, अर्थात दूसरे से आकार में बड़ा हो जाता है तो यह एक ही जगह पर घूमता रहेगा। क्या यह बात ठीक नही है? अत: पति पत्नी में प्रभुत्व जमाने वाली कोई बात नहीं है। यह तो परस्पर सूझबूझ एवम् पूर्ण सहयोग की बात है जिसका प्रभाव पूरे परिवार और समाज पर पड़ना चहिए।"

"..... विवाह का अभिप्राय आप कह सकते हैं, आपको प्रसन्नता, उल्लास आदि वो सभी आशीर्वाद देना है जो दो व्यक्तियों के मिलन से पाने की आशा की जा सकती है।"

".... सहजयोगी को जान लेना चाहिए कि उसके अन्दर जिस शिशु ने जन्म लिया है वह आत्मा है। आत्मा ने ही उसके अन्दर जन्म लिया है अब उसे कुण्डलिनी के माध्यम से इसका पोषण करना है, इसे सींचना है और इसकी देखभाल करनी है, इसे उन्नत करना है। अन्य मूर्खतापूर्ण चीजों के लिए समय कहां है? आपके हाथ में एक बच्चा है। आप सभी माताएं आत्मा रूपी बच्चे की देखभाल कर रही हैं। इन सभी चीजों के लिए समय ही कहां है? चित्त केवल एक ही चीज पर होना चाहिए-इस बच्चे को प्रसन्न रखने के लिए, बड़ा करने के लिए, ताकि यह मेरी अभिव्यक्ति करे, मैं क्या कर सकती हूँ?"

".... अत: हमे यह बात महसूस करनी है कि सहजयोगियों के लिए पति-पत्नी सम्बन्ध अति महत्वपूर्ण हैं। आप एक दूसरे के पूरक हैं। सम्बन्ध यदि ठीक न होंगे तो सहजयोग कार्यान्वित न हो पाएगा। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि स्त्री हावी हो जाए। परस्पर सम्मान, प्रेम, सूझबूझ एवम् सौन्दर्य ही महत्वपूर्ण है।"

".... महिला की पहचान उसके बलिदानों से है। ये एक चुनौती है। मैं आप को इसलिए बता रही हूँ कि आप सब आत्मसाक्षात्कारी आत्माओं को विनम्र होना होगा। विनम्रता के बिना आप श्रेष्ठ न हो पाएंगे। हर बात में आप हावी हो जाती हैं। किस लिए? यदि हम अहंकारी और दमनकारी हैं तो गौरी (Virgin) की पूजा कर पाना असंभव है।"

".... अपने बच्चे के लिए जिस प्रकार आपके हृदय में प्रेम उमड़ता है या अपने बच्चे के लिए जिस प्रकार आपके मन में भावनाएं आती है वैसी ही भावनाएं सभी के लिए आनी चाहिएं। सबके लिए आपको मां सम होना है। आपको सभी की मां होना है केवल अपने बच्चों की ही नहीं। अपने प्रेम को विस्तृत करें। जो स्त्री ऐसी नहीं है उसका कोई सम्मान नहीं करता। आपको बस मां सम बनना है।"

".... मानव में भिन्न भावानात्मक समस्यओं के कारण हृदय चक्र पकड़ जाता है। पति-पत्नी यदि हर समय झगड़ते रहते हों तो घर में झगड़ा बना रहता है, विशेषतौर पर मां यदि दमनकारी

हो तो बच्चों का हृदय चक्र खराब हो जाता है। पिता भी यदि उग्र स्वभाव का हो तो भी बच्चों का यह चक्र पकड़ जाता हैं अत: आवश्यक है कि पति-पत्नी बच्चों के सामने परस्पर न झगड़ें।"

"..... बच्चों की देखभाल आप नहीं करते, परमात्मा उनकी परवरिश करता है। आप तो केवल उसके यन्त्र हैं। जितना अधिक आप परमात्मा से जुड़े रहेंगे आपके बच्चों की उतनी ही अच्छी परवरिश होगी। आप जानते हैं कि उनसे किस प्रकार व्यवहार करना है। आप उनके प्रति करुणामय हैं, आप जानते हैं कि उनकी समस्याओं का समाधान कैसे करना है। परमात्मा से यदि आपको प्रेम प्राप्त होता रहता है तो अपने बच्चों की देखभाल बेहतर कर सकते हैं। परमात्मा में आपकी यदि कोई दिलचस्पी नहीं तो वे भी आपमें दिलचस्पी नहीं लेते। यह बात हम नहीं समझते, हम सोचते हैं कि परमात्मा में दिलचस्पी लेकर हम उसपर (परमात्मा) पर अहसान करते हैं।"

विवाह की कसमें:-

दुल्हन: मैं तुम्हें तुम्हारा मूलाधार चक्र ठीक रखने में सहायक होऊंगी। अपनी सारी धन सम्पत्ति तुम मुझे सौंप दो। उसकी मैं देखभाल करूंगी। आपको मेरा या अपने भाई बहनों द्वारा बनाया खाना खाना होगा। यदि कहीं बाहर आप खाना खाएंगे तो उसे चैतन्यित करेंगे। मैं आपके प्रति वफादार रहूंगी और आप मेरे प्रति वफादार होंगे।

दुल्हन: अपनी शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा मैं गृह कार्य करूंगी। प्रेम एवम् स्नेहपूर्वक मै रहूंगी और आपकी आज्ञा पालन करूंगी। मेरे कार्य में आप मेरी सहायता करें और सहजयोग कार्य में मैं आपकी सहायता करूंगी।

दुल्हन: मै अपने लक्ष्मी चक्र को ठीक रखूंगी और आप लक्ष्मी तत्व का सम्मान करेंगे, इससे आपका लक्ष्मी तत्व ठीक रहेगा। जो भी कुछ अर्जन करेंगे उसका पूरा हिसाब मुझे देंगे कुछ भी छिपाएंगे नहीं।

दूल्हा: मै तुम्हें प्रेम एवम् स्नेहपूर्वक शान्ति एवम् प्रसन्नता दूंगा परन्तु तुम्हें भी मेरी शान्ति और प्रसन्नता के विषय में सोचना होगा। मेरी आज्ञा के बिना तुम कहीं बाहर नहीं जाओगी और मै जब कहीं बाहर जाऊंगा तो तुम्हें बताकर जाऊंगा। अतीत के विषय में न हम सोचेंगे और न इसके विषय में बात करेंगें।

दूल्हा: तुम्हे मेरी और मेरे बच्चों की देखभाल करनी होगी तथा हमारे घर पर आने वाले सहजयोगी भाई बहनों का स्वागत एवम् सम्मान करना होगा।

दूल्हा: सहजयोग का कार्य करते हुए यदि मुझसे कोई गलती हो जाए तो तुम मुझे क्षमा करोगी और मै तुम्हें।

दोनो कहते है: परमपूज्य माता जी ने इस महायज्ञ द्वारा हमें विवाह के इस पवित्र बन्धन में बांध दिया है। ये हमारा महान सौभाग्य है और आदि शक्ति माताजी श्री निर्मला देवी की महान कृपा है।

हम अपना सर्वस्व- स्वास्थ्य, वैभव, मस्तिष्क एवम् हृदय-उनके चरण कमलों मे अर्पित कर देंगे।

हम शपथ लेते हैं कि हम परस्पर वफादार रहेंगे।

सहजयोग को बढ़ाने के लिए हम निरन्तर कार्य करते रहेंगे।

अपने बच्चों का पोषण हम सहजयोग में करेंगे, ये हमारा परम कर्त्तव्य है।

संदेश

24 जुलाई 1994 को इटली मे गुरु पूजा हुई। श्रीमाताजी ने एक सुन्दर प्रवचन किया। उन्होंने कहा कि वे मां हैं, प्राचीन काल के सन्यासियों तथा कठोर गुरु सम नहीं हैं। पहली बार उन्होंने बताया कि तुम्हें उन्नत होना होगा और परिपक्व होना होगा और गुरु पूजा के इस अवसर पर गुरु पद प्राप्त करना होगा। प्रवचन के आरम्भ में उन्होंने बताया कि हमें स्वंय का साक्षी बनना होगा अन्य लोगो का नहीं। हमें अपनी चिन्ता करनी होगी उन पागल लोगों की नहीं जो द्वार खुले होने के कारण सहजयोग में आ गए है। दो शत्रुओं से हमे मुक्ति प्राप्त करनी है: क्रोध एवम् भय। क्रोधी व्यक्ति सदैव सहमा हुआ और असुरक्षित होता है क्योंकि वह स्वंय को अन्य लोगों में देखता है। आक्रामक स्वभाव हमें भयातुर करता है। इस स्थिति का सामना करने के लिए हमें चैतनता का भाव लाना होगा और देखना होगा कि "मै परमात्मा से जुड़ा हुआ हूँ।" श्रीमाता जी ने कहा कि हमें न केवल उदार होना है परन्तु अपनी उदारता का आनन्द भी लेना है, क्योंकि उस स्थित में हम अन्य लोगों के लिए अपना प्रेम उड़ेल रहे होते हैं। गुरु को परिपक्वता की स्थिति प्राप्त करनी चाहिए क्योंकि परिपक्वता से उसे आत्मविश्वास मिलता है और श्री माताजी द्वारा प्रदत्त शक्तियों में विश्वास प्राप्त होता है। जन्म-जन्मान्तरों से हम जिस की खोज कर रहे थे, वह सत्य अब हमें मिल गया है अब हमें इससे जुड़ जाना है और आध्यात्मिक रूप से विश्वस्त होना है कि सहजयोग को बढ़ाने के लिए हम ही वे आध्यात्मिक लोग हैं जिन्हें अपने माध्यम के रूप में परमात्मा ने चुना है। अन्यथा हम ईसा मसीह द्वारा कहे गए चट्टान पर पड़े बीज सम हैं। जो शक्तियां हमें प्राप्त हुई हैं उनका उपयोग करने का और सहजयोग के प्रति जिम्मेदार बनने का यह उपयुक्त समय है। यह स्थिति प्राप्त करके हमें अपने अगुवाओं का साथ देना चाहिए उनमे दोष नहीं खोजने चाहिएं, न ही ईर्ष्यावश उनकी शिकायत श्री माताजी से करनी चाहिए। निम्नलिखित शब्दों से श्रीमाता जी ने अपना प्रवचन समाप्त किया:

"तो अब आवश्यकता है कि आप अपनी जागृति को, आध्यात्मिकता को उन्नत करें और स्वतः चलने वाले सहजयोग कार्य के प्रति पूर्ण सहयोग एवम् समर्पण के क्षेत्र में प्रवेश करें।

जय श्रीमाता जी